यज्ञीय कर्मकांड प्रकरण

हवनों का क्रम

यह क्रम स्मार्त-विधान के अनुसार मध्यम वृत्त के यज्ञों के लिए बनाया गया है। एक दिन में समाप्त हो जाने वाले हवनों के लिए यह विधान समुचित है। इस विधान के अनुसार इस प्रकार कार्यक्रम निर्धारित करना होता है—

(१) मंगलाचरण
(२) पवित्रीकरण
(३) आचमन
(४) शिखावंदन
(५) प्राणायाम
(६) अभिसिंचन
(७) अघमर्षण
(८) न्यास
(९) पृथ्वी पूजन
(१०) संकल्प
(११) यज्ञोपवीत-परिवर्तन
(१२) यज्ञोपवीत-धारण
(१३) पुराना यज्ञोपवीत उतारना
(१४) चंदन-धारण
(१५) अथ वरणम्
(१६) रक्षा-सूत्र
(१७) कलश स्थापना-पूजन
(१८) दीप-पूजन
(१९) गणेश-गौरी पूजन
(२०) पुरुष सूक्त
(२१) षोडशोपचार देव पूजन
(२२) अथ नवग्रह-स्थापना एवं पूजन
(२३) गायत्री-आवाहन
(२४) छह दिशाओं में देव-स्थापन तथा पूजन
(२५) देवों का आवाहन
(२६) सर्वदेव नमस्कार
(२७) पंचवेदी-स्थापना
(२८) स्विष्टकृत भोग
(२९) सर्वदेव-स्थापन के लिए सर्वतोभद्र चक्र
(३०) स्वस्तिवाचन
(३१) रक्षा-विधान
(३२) पंच भू संस्कार
(३३) कुंड-प्रतिष्ठा एवं मेखला पूजन
(३४) पंचामृत
(३५) कुशकंडिका
(३६) प्रोक्षण
(३७) अग्नि-स्थापना—आवाहन और पूजन
(३८) समिधाधानम्
(३९) जल प्रसेचन
(४०) आज्याहुति
(४१) पंचवारुणी होम
(४२) नवग्रह होम
(४३) नवग्रह अधिदेवता होम
(४४) नवग्रह प्रत्यधिदेवता होम
(४५) पंच लोकपाल होम
(४६) दस दिक्पाल होम
(४७) सर्वतोभद्र मंडल देवताओं का होम
(४८) प्रधान देव का होम—गायत्री की आहुति
(४९) स्विष्टकृत होम
(५०) पूर्णाहुति होम
(५१) वसोर्धारा
(५२) बर्हिहोम
(५३) तर्पण
(५४) नीराजन-आरती
(५५) घृत अवघ्राण
(५६) भस्म-धारण
(५७) क्षमा-प्रार्थना
(५८) साष्टांग नमस्कार
(५९) शुभकामना
(६०) शांति-अभिसिंचन
(६१) पुष्पांजलि
(६२) सूर्यार्घ्य दान
(६३) प्रदक्षिणा
(६४) दिक्पालों को बलिदान
(६५) नवग्रह बलि
(६६) महाक्षेत्रपाल बलि
(६७) संक्षिप्त दस दिक्पाल एवं महाक्षेत्रपाल बलि
(६८) गणेश-गौरी बलि
(६९) योगिनी बलि
(७०) अन्य देवताओं को बलि
(७१) बलिदान क्रिया एवं बलिदान-संकल्प
(७२) क्षमा-प्रार्थना—यज्ञ भगवान की स्तुति
(७३) विसर्जन
(७४) अभिषेक:
(७५) तिलक एवं फलदान

Scanned with CamScanner

बड़े हवनों में

कुछ अधिक विस्तार करना होता है तो कुंड और मंडप की विशेष विधिपूर्वक रचना करके पाँच वेदी स्थापित करते हैं—(१) सर्वतोभद्र की प्रधान वेदी, (२) गणपति वेदी, (३) वास्तु वेदी, (४) योगिनी-क्षेत्रपाल वेदी, (५) नवग्रह वेदी। इन वेदियों की रचना रंगीन धान्यों से की जाती है। इन पर कलश स्थापित किए जाते हैं। नवग्रह वेदी के ईशान में रुद्रकलश स्थापित किया जाता है। इन वेदियों पर स्थापित देवताओं का विस्तृत विधिपूर्वक पूजन कराया जाता है। स्वस्तिवाचन के साथ-साथ शांतिपाठ भी करते हैं। वसोर्धारा की स्थापना और पूजा की जाती है। नांदी श्राद्ध भी बड़े हवनों में होता है। यज्ञ-मंडप के चार द्वारों पर चार पंडित चार वेदों का पाठ करते हैं। पंचगव्य से यज्ञ की सभी वस्तुओं का तथा भूमि का प्रक्षालन किया जाता है। कुश-कंडिका के समय चरु पकाया जाता है और उसे हवन करते हैं। हवन के आरंभ में प्रजापति आदि ४ आहुतियों के पश्चात गणपति की ८, २८ या १०८ आहुतियाँ देते हैं। उत्तरांग पूजन किया जाता है। पूर्णाहुति के बाद वसोर्धारा से भी घी होमा जाता है। पूर्ण पात्र दान, प्रणीता विमोक, यज्ञ अवशिष्ट घृत का अवघ्राण किया जाता है। इस प्रकार बड़े यज्ञों में कुछ विधियाँ बढ़ जाती हैं।

छोटे हवन

नित्य के हवन या छोटे हवन में मध्यम होम से भी विधान को संक्षिप्त कर लिया जाता है—(१) जल से पवित्र करना, (२) आसन पवित्र करना, (३) आचमन, (४) शिखावंदन, (५) प्राणायाम, (६) अघमर्षण, (७) न्यास, (८) चंदन-धारण, (९) संकल्प, (१०) स्वस्तिवाचन, (११) रक्षा-विधान, (१२) कलश, (१३) देव पूजन, (१४) गायत्री पूजन, (१५) षोडशोपचार देव पूजन, (१६) पंच भू संस्कार, (१७) अग्नि-स्थापन, (१८) कुश-कंडिका, (१९) समिधाधान, (२०) जलप्रसेचन, (२१) प्रधान होम, (२२) तर्पण,(२३) पुष्पांजलि, (२४) स्विष्टिकृत होम, (२५) पूर्णाहुति, (२६) नीरांजना, (२७) भस्म धारण, (२८) घृत अवघ्राण, (२९) क्षमा-प्रार्थना, (३०) अभिषेक, (३१) विसर्जन (३२) शुभकामना, (३३) प्रदक्षिणा, (३४) प्रसाद-वितरण।

कहीं-कहीं देशांतर-लोकातंर परंपरागत पद्धति एवं स्मृति तथा सूत्र-भेद के कारण कुछ क्रियाएँ न्यूनाधिक तथा आगे-पीछे भी हो जाती हैं। उनमें दोष का विरोध नहीं मानना चाहिए।

अति संक्षिप्त हवन

जिनको कोई मंत्र याद नहीं है, वे उपर्युक्त सब क्रियाएँ गायत्री मंत्र से कर सकते हैं। जिनको उपर्युक्त सब क्रियाएँ करने में असुविधाएँ हैं, वे इनमें से भी संक्षिप्त कर सकते हैं। जिन्हें कोई विधान न आता हो, वे १२ अंगुल लंबी-चौड़ी, ३ अंगुल ऊँची मिट्टी की वेदी बनाकर अथवा ताँबे का हवनकुंड लेकर आम की समिधाओं में कपूर से अग्नि प्रज्वलित करें और अकेले हों तो घृत, शक्कर, हवन-सामग्री मिलाकर गायत्री मंत्र से हवन कर लें। दो या अधिक व्यक्ति हों तो एक घृत चढ़ाए,शेष हवन-सामग्री चढ़ाएँ। सुपारी, घृत, अक्षत तथा कुछ मिष्टान चम्मच में रखकर उससे पूर्णाहुति कर लें। बचे हुए घृत को सिर-नेत्रों पर लगाना, सूँघना तथा भस्म का धारण करना भी उचित है। इस प्रकार अति सरल रीति से हवन हो सकता है।

कर्मकांड प्रारंभ

कराए जाने वाले कर्मकांड की व्यवस्था बनाकर जाँच कर जब कर्मकांड प्रारंभ करना हो तो संचालक को सावधान होकर वातावरण को अनुकूल बनाना चाहिए। कुछ जयघोष बोलकर शांत रहने की अपील करके कार्य प्रारंभ किया जाए। संचालक आचार्य का काम करने वाले स्वयंसेवक को नीचे दिए गए अनुशासन के साथ कार्य प्रारंभ करना चाहिए, वे हैं—(१) व्यासपीठ नमन, (२) गुरु वंदना, (३)सरस्वती वंदना, (४) व्यास वंदना।

ये चारों कृत्य कर्मकांड के पूर्व के हैं—यजमान के लिए नहीं, संचालक आचार्य के लिए हैं। कर्मकांड ऋषियों-मनीषियों द्वारा विकसित ज्ञान-विज्ञानसमन्वित अद्‌भुत कृत्य हैं। उस परंपरा का निर्वाह हमसे हो सके, इसलिए उस स्थान को तथा अपने आप को संस्कारित करने, उस दिव्य प्रवाह का माध्यम बनने की पात्रता पाने के लिए यह कृत्य किए जाते हैं।

व्यासपीठ नमन

व्यासपीठ पर संचालक के आसन पर बैठने के पूर्व उसे श्रद्धापूर्वक नमन करे। यह हमारा आसन नहीं, व्यासपीठ है। इसके साथ एक पुनीत परिपाटी जुड़ी है। उस पर बैठकर उस परिपाटी के साथ न्याय कर सकें, इसके लिए उस पीठ की गरिमा-मर्यादा को प्रणाम करते हैं, तब उस पर बैठते हैं।

गुरु वंदना

गुरु व्यक्ति तक सीमित नहीं, वह एक दिव्य चेतन-प्रवाह का ईश्वर का ही एक अंश होता है। परीक्षा लेकर पास-फेल करने वाला तथा पास बिठाकर पढ़ाने वाला, दोनों ही शिक्षक कहे जाते हैं। चेतना का एक अंश जो अनुशासन, कर्म-व्यवस्था बनाता, उसके फल देता है—वह ईश्वर है। दूसरा अंश जो अनुशासन, कर्म-मर्यादा सिखाता है, उनमें गति पैदा करता है—वह गुरु है।

Scanned with CamScanner

ऐसी चेतना के रूप में गुरु की वंदना करके उस अनुशासन को अपने ऊपर आरोपित करना चाहिए उसका उपकरण बनाने के लिए भावभरा आवाहन करना चाहिए, ताकि अपनी वृत्तियाँ और शक्तियाँ उसके अनुरूप कार्य करती हुई उस सनातन गौरव की रक्षा कर सकें। हाथ जोड़कर नीचे लिखी गुरुवंदनाओं में से कोई एक अथवा वैसी ही अन्य वंदनाएँ भावनापूर्वक सस्वर बोलें—

ब्रह्मानंदं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम्।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥ १॥
अखण्डानन्दबोधाय शिष्यसंतापहारिणे।
सच्चिदानंदरूपाय तस्मै श्री गुरवे नमः॥ २॥

सरस्वती वंदना

माँ सरस्वती वाणी की देवी हैं। कर्मकांड में वाणी का प्रयोग करना पड़ता है। यदि वाणी सुसंस्कारनिस्सृत न हुई तो उसमें प्रवाह पैदा नहीं होगा। बोले गए मंत्र शब्दमात्र न रह जाएँ, मंत्र बनें; कहे हुए शब्दों में अंतःकरणों को प्रभावित करने योग्य प्राण पैदा हों—इस कामना-भावना के साथ माँ सरस्वती की भावभरी वंदना की जाए—

लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिः गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः।
एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मां सरस्वति॥ १॥
सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेद वेदांतवेदांग विद्यास्थानेभ्य एव च॥ २॥
मातस्त्वदीयपद पंकज भक्तियुक्ता,
ये त्वां भजंति निखिलानपरान्विहाय।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण,
भूवह्निवायुगगनांबुविनिर्मितेन ॥ ३॥

व्यास वंदना

व्यासपीठ पर बैठकर कर्मकांड संचालन का जो उत्तरदायित्व उठाया है, उसके अनुरूप अपने अंतःकरण, बुद्धि, मन, वाणी आदि को बनाने की याचना, उसके निर्वाह का प्रयास पूरी ईमानदारी से करने के संकल्प की घोषणा के भाव से व्यास वंदना के एक-दो श्लोक भावभिवोर होकर बोले जाएँ—

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः॥ १॥
नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे, फुल्लारविंदायतपत्रनेत्र।
येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः॥ २॥

ये सभी कृत्य आचार्य-संचालक के अपने संस्कार के हैं। इन्हें जितनी प्रगाढ़ श्रद्धा के साथ किया जाता है, दिव्य प्रवाह से जुड़ जाने की उतनी ही प्रभावी संभावना बन जाती है।

साधनादिपवित्रीकरणम्

सत्कार्यों व श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिए यथाशक्ति साधना-माध्यम भी पवित्र रखने चाहिए। यज्ञ संस्कार आदि कार्यों में जो उपकरण, साधन-सामग्री प्रयुक्त हों, उनमें भी देवत्व का संस्कार जगाया जाता है। फल काटने का चाकू साफ किया, पोंछा जाता है। ऑपरेशन के चाकू को भाप में ऊँचे दबाव और तापक्रम पर शोधित किया जाता है—अदृश्य विषाणुओं से उसे मुक्त किया जाता है। कर्मकांड में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों व साधनों में सन्निहित अशुभ संस्कार हटाए जाते हैं, उन्हें मंत्रशक्ति से नष्ट किया जाता है।

परिस्थितियों के अनुरूप एक या अधिक स्वयंसेवक स्वच्छ कलश लेकर खड़े हों। मंत्रपाठ के साथ पल्लवों, कुशों या पुष्पों से सभी उपकरणों-साधनों का सिंचन करें। समिधा, पात्र, हव्य आदि सभी का सिंचन किया जाए। भावना करें कि भावभरे आह्वान और मंत्रशक्ति के प्रभाव से उनमें कुसंस्कारों के पलायन और सुसंस्कारों के उभार-स्थापन का क्रम चल रहा है।

ॐ पुनाति ते परिस्रुत ँ सोम ँ सूर्यस्य दुहिता।
वारेण शश्वता तना। (यजु० १९/४)
ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥
(यजु० १९/३९)
ॐ यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमंतरा। ब्रह्म तेन, पुनातु मा।
(यजु० १९/४१)
ॐ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः।
यःपोता स पुनातु मा। (यजु० १९/४२)
ॐ उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च।
मां पुनीहि विश्वतः॥ (यजु० १९/४३)

यह क्रम यज्ञों, संस्कारों, भूमि-पूजन, प्राण-प्रतिष्ठा, पर्वायोजनों आदि सभी में अपनाया जाने योग्य है।

यज्ञ-संचालन

मंगलाचरण

यज्ञकर्म अथवा अन्य धर्मानुष्ठानों को संपन्न करने वाले याजकों के आसन पर बैठते समय उनके कल्याण, उत्साह-अभिवर्द्धन, सुरक्षा और प्रशंसा के लिए पीले अक्षत अथवा पुष्प वर्षा करके आसन दिया जाता है, स्वागत किया जाता है, उनके सौभाग्य को सराहा जाता है। मंत्र के साथ भावना की जाए कि इस पुण्यकर्म में भाग लेने वालों पर देव अनुग्रह बरस रहा है और देवत्व के धारण तथा निर्वाह की क्षमता का विकास हो रहा है। आचार्य निम्न मंत्र से यजमान के ऊपर चावल फेंकें—

Scanned with CamScanner

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ᳪ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देव हितं यदायुः॥
(यजु० २५/५१)

पवित्रीकरण

देव-उद्देश्य की पूर्ति के लिए मनुष्य को स्वयं भी देवत्व धारण करना होता है। देवशक्तियाँ पवित्रताप्रिय हैं। उन्हें शरीर और मन से, आचरण और व्यवहार से शुद्ध मनुष्य ही प्रिय होते हैं। इसलिए यज्ञ जैसे देव-प्रयोजन में संलग्न होते समय शरीर और मन को पवित्र बनाना पड़ता है, पवित्रता की भावना करनी पड़ती है। भावना करें कि हमारे भावभरे आवाहन के नाते सूक्ष्मसत्ता हम पर पवित्रता की वृष्टि कर रही है। हम उसे धारण कर रहे हैं।

बाएँ हाथ में जल लेकर उसे दाहिने हाथ से ढक लिया जाए। पवित्रीकरण का मंत्रोच्चारण किया जाए। तदुपरांत उस जल को सिर तथा शरीर पर छिड़क लिया जाए।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यंतरः शुचिः॥
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु।

आचमन

वाणी, मन और अंतःकरण की शुद्धि के लिए तीन बार आचमन किया जाता है—मंत्रपूरित जल से तीनों को भाव-स्नान कराया जाता है। किसी आयोजन के अवसर पर तथा भविष्य में तीनों को अधिकाधिक समर्थ एवं प्रामाणिक बनाने का संकल्प किया जाता है।

आचमन-विधि

आचमन के समय जल का नख से स्पर्श तथा ओष्ठ से शब्द नहीं करना चाहिए। प्रथम आचमन से आध्यात्मिक, दूसरे से आधिभौतिक और तीसरे से आधिदैविक शांति होती है। इसलिए तीन बार करें।

संहताङ्गुलिना तोयं गृहीत्वा पाणिना द्विजः।
मुक्तांगुष्ठकनिष्ठेन शेषेणाचमनं चरेत्॥ (नागदेव)

बाएँ हाथ की हथेली में उँगलियों को मिलाकर दाहिने हाथ की हथेली में जल लेकर अँगूठा तथा कनिष्ठा को अलग करके आचमन करना चाहिए।

आचमन मंत्र इस प्रकार है—हर मंत्र के साथ एक आचमन किया जाए।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा॥ ३॥
(आश्व० गृ० सू० १/२४)

शिखावंदन

शिखा भारतीय धर्म की ध्वजा है, जो मस्तकरूपी किले के ऊपर हर भारतीय संस्कृति-प्रेमी को फहराते रहनी पड़ती है। इसे गायत्री का प्रतीक भी माना गया है। मस्तिष्क सद्विचारों का केंद्र है। इसमें देवभाव ही प्रवेश करने पाएँ। भावना करें कि सांस्कृतिक ध्वजा को धारण करने योग्य प्रखरता, तेजस्विता का विकास हो रहा है।

दाहिने हाथ की उँगलियों को गीला कर शिखा स्पर्श करें। मंत्र बोलने के बाद शिखा में गाँठ लगाएँ। जिनके संयोगवश शिखा नहीं है, ऐसे व्यक्ति तथा महिलाएँ उस स्थान को भावनापूर्वक स्पर्श करें।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

प्राणायाम

कमर सीधी, बायाँ हाथ मुड़ा हुआ, हथेली चौड़ी, दाहिने हाथ की कोहनी बाएँ हाथ की हथेली पर बीचोबीच, चारों उँगलियाँ बंद। अँगूठे से दाहिने नथुने को बंद करके, बाएँ नथुने से धीरे-धीरे पूरा साँस खींचना—यह पूरक हुआ। साँस को भीतर रोकना, दाएँ हाथ की तर्जनी और मध्यमा उँगलियों से बायाँ नथुना भी बंद कर लेना; अर्थात दोनों नथुने बंद—यह अंतःकुंभक हुआ। अँगूठा हटाकर दाहिना नथुना खोल देना, उसमें से साँस को धीरे-धीरे बाहर निकलने देना—यह रेचक हुआ। इसके बाद कुछ समय साँस बाहर रोक देनी चाहिए। बिना साँस के रहना चाहिए—इसे बाह्यकुंभक कहते हैं। इन चारों क्रियाओं को करने में एक प्राणायाम पूरा होता है। यह क्रिया कठिन लगे तो दोनों हाथ गोद में रखते हुए दोनों नथुनों से साँस लेते हुए पूरक, कुंभक, रेचक का क्रम नीचे लिखी भावनानुसार पूरा करें।

साँस खींचने के साथ भावना करनी चाहिए कि संसार में व्याप्त प्राणशक्ति और श्रेष्ठता के तत्त्वों को साँस द्वारा खींच रहे हैं। साँस रोकते समय भावना करनी चाहिए कि वह प्राणायाम—दिव्यशक्ति तथा श्रेष्ठता अपने रोम-रोम में प्रवेश करके उसी में रम रही है। जैसे मिट्टी पर जल डालने से वह उसे सोख लेती है, उसी तरह शरीर और मन ने प्राणायाम की साँस, जो भीतर पहुँचती है, की समस्त श्रेष्ठता को अपने में सोख लिया। साँस छोड़ते यह भावना करनी चाहिए कि जितने भी दुर्गुण अपने में थे, वे साँस के साथ निकलकर बाहर चले गए और अब कभी वापस लौटकर नहीं आएँगे। इसके उपरांत कुछ समय बिना साँस के ग्रहण किए रहना चाहिए और भावना करनी चाहिए कि निकलते हुए दोष-

Scanned with CamScanner

दुर्गुणों को सदा के लिए बहिष्कृत कर दिया गया और उनके वापस न आने देने को दरवाजा बंद कर दिया गया।

मंत्रोच्चार दूसरे लोग करते रहें। याज्ञिक केवल उपर्युक्त प्राणायाम-विधान पूरा करें। यह प्राणायाम अपने भीतर शरीरबल, मनोबल और आत्मबल की वृद्धि के लिए है। दोष-दुर्गुणों के निवारण-निष्कासन के लिए उन्हीं भावनाओं के साथ उसे करना चाहिए।

प्राणायाम विनियोग

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः। ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छंदांसि। अग्निवाय्वादित्यबृहस्पति वरुणेंद्र विश्वदेवा देवताः अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः॥ ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छंदः सविता देवतागिनर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः॥ ॐ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्री छंदो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता प्राणायामे विनियोगः॥

प्राणायाम मंत्र

नीचे लिखे मंत्र को प्रत्येक प्राणायाम के समय तीन या एक बार जपें। इस प्रकार तीनों प्राणायाम तीन या पाँच बार करें।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं, ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ॥

अभिसिंचन

ॐ आपो हिष्ठेत्यादि त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः॥

बाएँ हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से नीचे लिखे मंत्र बोलते हुए एक से सात तक अपने शरीर पर, आठवें से पृथ्वी पर और नवें से मस्तक पर जल छोड़ें।

ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवः॥ १॥ ॐ ता न ऊर्जे दधातन॥ २॥ ॐ महे रणाय चक्षसे॥ ३॥ ॐ यो वः शिवतमो रसः॥ ४॥ ॐ तस्य भाजयतेह नः॥ ५॥ ॐ उशतीरिव मातरः॥ ६॥ ॐ तस्माऽअरङ्गमामवो॥ ७॥ ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ॥ ८॥ ॐ आपो जन यथा च नः॥

हे जल! जैसे माता अपने पुत्र का दूध आदि से कल्याण करती है, वैसे ही मुझे उत्तम गरिष्ठ भोजन और संतान उत्पन्न करने तथा सुखादि भोगने की शक्ति दो।

अघमर्षण

ॐ अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः॥

दाहिने हाथ में जल लेकर नासिका से स्पर्श करके नीचे लिखा मंत्र तीन बार या एक बार पढ़ें और ध्यान करें कि यह जल श्वास के साथ नासिका के दाहिने छिद्र से भीतर जाकर अंतःकरण को शुद्ध करके बाएँ छिद्र से बाहर आया है। पश्चात उस जल को बिना देखे बाईं ओर फेंक दें। नीचे लिखा मंत्र पढ़ें—

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचंद्रमसौ धाता यथापूर्वकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥

महाप्रलय के अंधकार में केवल परब्रह्म रहे। सृष्टि के आदि में जलमय समुद्र हुआ, पश्चात ब्रह्मा हुए, उन्होंने दिन और रात्रि करने वाले सूर्य-चंद्रमा को रचा। पश्चात रात्रि, दिन, संवत्सर और स्वर्ग-लोकादि की रचना की।

न्यास

शरीर के विभिन्न अंगों की शुद्धि एवं शक्ति के लिए स्पर्श करना 'अंगन्यास' और हाथ की उँगलियों का स्पर्श करना 'न्यास' कहलाता है। इसका विधान इस प्रकार है—

बाएँ हाथ की हथेली पर जल लेना, दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों को इकट्ठा करना, उन एकत्रित उँगलियों को हथेली वाले जल में डुबोना। अब जहाँ-जहाँ मंत्रोच्चार के संकेत हैं, वहाँ पहले बाईं और फिर दाईं ओर के क्रम से स्पर्श करते हुए हर बार में एकत्रित उँगलियाँ डुबोते और लगाते चलना—यह न्यास कर्म है। इसका प्रयोजन है शरीर के अति महत्त्वपूर्ण अंगों में पवित्रता की भावना भरना, उनकी देव चेतना को जाग्रत करना। अनुष्ठानकाल में उनके जाग्रत देवत्त्व से सारे कृत्य पूरे करना तथा इसके अनंतर भी इन अवयवों को, इंद्रियों को सशक्त एवं संयत बनाए रहना।

भावना करें कि इंद्रियों-अंगों में मंत्रशक्ति के प्रभाव से दिव्य प्रवृत्तियों की स्थापना हो रही है। ईश्वरीय चेतना हमारे आवाहन पर वहाँ विराजित होकर अशुभ का प्रवेश रोकेगी और शुभ को क्रियान्वित करने की प्रखरता बढ़ाएगी।

ॐ वाङ्मे आस्येऽस्तु।	(मुख को)
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु।	(नासिका के दोनों छिद्रों को)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।	(दोनों नेत्रों को)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।	(दोनों कानों को)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु।	(दोनों भुजाओं को)
ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु।	(दोनों जंघाओं को)
ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि, तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।	(समस्त शरीर को)

(पार० गृह०सू० १। ३। २५)

Scanned with CamScanner

कर न्यास

ॐ भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों की तर्जनी उँगलियों से अँगूठों का स्पर्श करे)। **ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः** (अँगूठे से तर्जनी उँगली का स्पर्श करे)। **ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः** (अँगूठे से मध्यमा बीच वाली उँगली का स्पर्श करे)। **ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः** (अँगूठे से अनामिका उँगली का स्पर्श करे)। **ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः** (अँगूठे से कनिष्ठका उँगली का स्पर्श करे)। **ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् करतल करपृष्ठाभ्यां नमः** (दोनों हाथों की मध्यमा व अनामिका उँगलियों से दोनों हथेली व उनकी पीठ का क्रम से स्पर्श करे)। इति कर न्यासः ॥

अंग न्यास

ॐ भूः हृदयाय नमः (दाहिने हाथ की मध्यमा व अनामिका उँगलियों से हृदय का स्पर्श करे)। **ॐ भुवः शिरसे स्वाहा** (उन्हीं उँगलियों से मस्तक का स्पर्श करे)। **ॐ स्वः शिखायै वषट्** (उन्हीं उँगलियों से शिखा—चोटी का स्पर्श करे)। **ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं कवचाय हुम्** (दाहिने हाथ की मध्यमा-अनामिका उँगलियों से बायाँ कंधा और बाएँ हाथ की उँगलियों से दाहिने कंधे का स्पर्श करे)। **ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट्** (दाहिने हाथ की अनामिका उँगली से दोनों नेत्रों व माथे के मध्य तृतीय नेत्र के वास्ते स्पर्श करे)। **ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् अस्त्राय फट्** (दाहिने हाथ की मध्यमा व अनामिका उँगलियों से दाहिने हाथ को सिर के पीछे की ओर से लाकर बाईं तरफ बाएँ हाथ की हथेली का स्पर्श करे)।

ॐ तत्पादयोः ॥ (दाहिने हाथ की उन दोनों उँगलियों से पैरों का स्पर्श करे)। **सवितुर्जंघयोः** (दोनों जंघाओं का स्पर्श करे)। **वरेण्यं कटि देशे** (कमर का स्पर्श करे)। **भर्गो नाभौ** (नाभि का स्पर्श करे)। **देवस्य हृदये** (हृदय का स्पर्श करे)। **धीमहि कंठे** (कंठ का स्पर्श करे)। **धियो नासाग्रे** (नाक के अग्र भाग का स्पर्श करे)। **यो नेत्रयोः** (प्रथम रीति से दोनों नेत्रों का स्पर्श करे)। **न ललाटेः** (ललाट—माथे का स्पर्श करे)। **इत्यंग न्यासः ॥**

पृथ्वी पूजन

जहाँ से अन्न, जल, वस्त्र, ज्ञान तथा अनेक सुविधा-साधन प्राप्त करते हैं, वह मातृभूमि सबसे बड़ा देवता है। माता के प्रति जैसी हमारे मन में अगाध श्रद्धा रहती है, वैसी ही मातृभूमि के प्रति भी रहनी चाहिए और मातृऋण से उऋण होने के लिए अवसर ढूँढ़ते रहना चाहिए। भावना करें कि धरती माता के पूजन के साथ उसके पुत्र होने के नाते माँ के दिव्य संस्कार हमें प्राप्त हो रहे हैं। माँ विशाल है, सक्षम है एवं हमें भी क्षेत्र, वर्ग आदि की संकीर्णता से हटाकर विशालता, सहनशीलता व उदारता जैसे दिव्य संस्कार प्रदान कर रही है। दाहिने हाथ में चावल, पुष्प, जल लें, बायाँ हाथ नीचे लगाएँ, मंत्र बोलें और पूजा की वस्तुओं को किसी पात्र में छोड़ दें। धरती माँ को हाथ से स्पर्श करके नमस्कार करें।

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ॥

संकल्प

हर महत्वपूर्ण कर्मकांड के पूर्व संकल्प कराने की परंपरा है। उसके कारण इस प्रकार हैं—अपना लक्ष्य, उद्देश्य निश्चित होना चाहिए। उसकी घोषणा भी की जानी चाहिए। श्रेष्ठ कार्य घोषणापूर्वक किए जाते हैं। हीन, स्वार्थपरक कृत्य चुपचाप लुक-छिपकर करने का मन होता है। संकल्प करने से मनोबल बढ़ता है। मन के ढीलेपन के कुसंस्कार पर अंकुश लगता है। स्थूल घोषणा से सत्पुरुषों का तथा मंत्रों द्वारा घोषणा से सत्-शक्तियों का मार्गदर्शन और सहयोग मिलता है। संकल्प में अपने गोत्र का उल्लेख भी किया जाता है। गोत्र ऋषि-परंपरा के होते हैं। यह बोध किया जाना चाहिए कि हम ऋषि-परंपरा के व्यक्ति हैं, तदनुसार उनके अनुरूप कार्यों को करने का उपक्रम उन्हीं के अंतर्गत करते हैं। संकल्प बोलने के पूर्व मास, तिथि, वार आदि सभी की जानकारी कर लेनी चाहिए। बीच में रुक-रुककर पूछना अच्छा नहीं लगता। यहाँ जो संकल्प दिया जा रहा है, वह किसी भी कृत्य के साथ बोला जा सकता है। वैसे भिन्न कृत्यों के अनुरूप संकल्प-नामाऽहं के आगे भिन्न-भिन्न निर्धारित वाक्य बोलकर भी पूरा किया जा सकता है। सामूहिक पर्वों आदि में, साप्ताहिक यज्ञों आदि में संकल्प नहीं भी बोले जाएँ तो कोई हर्ज नहीं है।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य, विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य, अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, भूर्लोके, जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते, मासानां मासोत्तमेमासे............मासे.....पक्षे.....तिथौ...........वासरे...... गोत्रोत्पन्नः..............नामाऽहं............सत्प्रवृत्तिसम्वर्द्धनाय, दुष्प्रवृत्युन्मूलनाय, लोककल्याणाऽऽत्मकल्याणाय, वातावरण परिष्काराय, भविष्योज्ज्वलकामनापूर्तये च प्रबल पुरुषार्थं करिष्ये, अस्मै प्रयोजनाय च कलशाद्यावाहितदेवता पूजन पूर्वकम्......कर्मसम्पादनार्थं सङ्कल्पमहं करिष्ये।

यज्ञोपवीत-परिवर्तन

यज्ञोपवीत को व्रतबंध भी कहते हैं। यह व्रतशील जीवन के उत्तरदायित्व का बोध कराने वाला पुण्य प्रतीक है। विशेष यज्ञ संस्कार आदि आयोजनों के अवसर पर उसमें भाग लेने वालों का यज्ञोपवीत बदलवा देना चाहिए। साप्ताहिक यज्ञों में यह आवश्यक नहीं। नवरात्र आदि अनुष्ठानों के संकल्प के

Scanned with CamScanner

समय जो यज्ञोपवीत बदला गया है तो पूर्णाहुति आदि में फिर न बदला जाए। व्यक्तिगत संस्कारों आदि में प्रमुख पात्रों तथा बच्चों के अभिभावकों आदि का यज्ञोपवीत बदलवा देना चाहिए। यदि वे यज्ञोपवीत पहने ही न हों तो कम से कम कृत्य के लिए अस्थायी रूप से पहना देना चाहिए। वे चाहें तो स्थायी भी करा लें।

यज्ञोपवीत बदलने के लिए यज्ञोपवीत का मार्जन किया जाए। यज्ञोपवीत संस्कार की तरह पाँच देवों का आवाहन-स्थापन उसमें किया जाए, फिर यज्ञोपवीत धारण मंत्र के साथ साधक स्वयं ही पहन लें। पुराना यज्ञोपवीत दूसरे मंत्र के साथ सिर की ओर से ही उतार दिया जाए। पुराने यज्ञोपवीत जल में विसर्जित कराए जाते हैं अथवा पवित्र भूमि में गाड़ दिए जाते हैं।

यज्ञोपवीत-धारण

निम्न मंत्र बोलकर नया यज्ञोपवीत-धारण करना चाहिए:—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

(पार० गृ० सू० २/२/११)

पुराना यज्ञोपवीत उतारना

निम्न मंत्रपाठ करते हुए पुराना यज्ञोपवीत गले में से ही होकर निकालना चाहिए—

ॐ एतावद्दिनपर्यंतं, ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्ते परित्यागो, गच्छ सूत्र यथा सुखम्॥

चंदन-धारण

मस्तिष्क को शांत, शीतल एवं सुगंधित रखने की आवश्यकता का स्मरण कराने के लिए चंदन धारण किया जाता है। अंतर में ऐसी सद्भावनाएँ भरी रखनी चाहिए, जिनकी सुगंध से अपने को संतोष एवं दूसरों को आनंद मिले।

भावना करें, जिस महाशक्ति ने चंदन को शीतलता-सुगंध दी है, उसी की कृपा से हमें भी वे तत्त्व मिल रहे हैं, जिनके आधार पर हम चंदन की तरह ईश्वर-सान्निध्य के अधिकारी बन सकें।

इन भावनाओं के साथ चंदन या रोली यज्ञकर्त्ताओं एवं उपस्थित लोगों के मस्तिष्क पर लगाई जाए।

ॐ चन्दनस्य महत्पुण्यं, पवित्रं पापनाशनम्।
आपदां हरते नित्यं, लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा॥

अथ वरणम्

यज्ञ का कोई एक यजमान होना चाहिए, जो ऋत्विजों व आचार्य, ब्रह्मा आदि को वरण करे। यदि सामूहिक या सार्वजनिक यज्ञ हो, तो भी इसका कोई कार्यकर्त्ता यजमान बने। कई दिन यज्ञ हो तो एक-एक दिन का एक-एक यजमान भी बन सकता है। आचार्य आदि का वरण केवल प्रारंभिक दिन ही होता है और वे ही अंत तक कार्य करते हैं।

तत्र पूर्वमाचार्यस्य वरणं पश्चात्सर्वेषां वरणम्।

सर्वप्रथम यजमान को आचार्य का वरण करना चाहिए, पीछे ब्रह्मा आदि का (यज्ञ में दस वरण होने चाहिए, कम से कम चार—आचार्य, ब्रह्मा, ऋत्विक और होता तो अवश्य ही होने चाहिए)।

तद्यथा:-आचार्य प्रति यजमानो ब्रूयात्-अस्मिन्नासने आस्यताम्।

यथाक्रम यजमान आसन देते हुए आचार्य से कहें—भगवन्! इस आसन पर विराजिए!

आचार्यो ब्रूयात्—आस्ये।

आचार्य बोले—'**आस्ये**' अर्थात बैठता हूँ।

ततो यजमान—नमोस्त्वनन्तायेति मंत्रेण पादप्रक्षालनं कुर्यात्।

यजमान आचार्य को आसन पर बैठाकर, '**नमोस्त्वनन्ताय**' मंत्र को पढ़ता हुआ उनके पैर धोए।

नमोस्त्वनन्ताय सहस्र मूर्त्तये सहस्र पादाक्षि शिरोरुबाहवे। सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटियुगधारिणे नमः॥१॥ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविंदाय नमो नमः॥२॥ गंधमाल्यादिभिरभ्यर्च्य ॐ युजन्ति बध्नमरुषं चरंतं परितस्थुषः। रोचंते रोचना दिवि॥१॥ युंजन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसारथे। शोणाधृष्णूनृवाहसा॥२॥ ॐ अद्येत्यादिनवग्रहमखहोमकर्मकर्तुं मेभिश्चंदनतांबूलकुंडलाङ्गलीयककमंडलुवासोभिराचार्यत्वेन अमुकगोत्रामुकशर्माणममुक वोध्यायिनं त्वामहं वृणे।

गंध, पुष्पादि से पूजा करके, चंदन, तांबूल, पुष्पाक्षत, यज्ञोपवीत, वस्त्रादि के साथ उनका वरण करे। फिर यजमान अपने गोत्रादि का नाम लेकर कहे—मैं आपको आचार्य स्वीकार करता हूँ।

(आचार्य) **वृतोऽस्मीत प्रतिवचनं दद्यात्।**

आचार्य कहे—'मैं स्वीकार करता हूँ।'

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते॥
इत्येन मंत्रेण कुशस्थैर्जलबिंदुभियजमानमभिषिंचेत्॥

'**ॐ व्रतेन........सत्याप्यते**' मंत्र से कुशस्थ जलबिंदु द्वारा आचार्य यजमान का अभिसिंचन करें।

आचार्य प्रार्थना

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीना बृहस्पतिः।
तथा त्वं ममं यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत॥

Scanned with CamScanner

इस प्रकार यजमान आचार्य की प्रार्थना करे—हे सुव्रत! जिस प्रकार स्वर्ग में बृहस्पति इंद्रादि देवताओं के आचार्य हैं वैसे ही आप हमारे इस यज्ञ में आचार्य हों।

अथ ब्रह्मवरणम्

ब्रह्माणं प्रति यजमानो ब्रूयात्-अस्मिन्नासने आस्यताम्।

फिर जिसको ब्रह्मा बनाना हो, उससे यजमान बोले—हे ब्राह्मन्! आप इस आसन पर बैठिए।

(ब्राह्मणः) आस्ये।

ब्राह्मण बोले—बैठता हूँ।

ततो यजमानः—नमोस्त्वनंतोयेति मंत्रेण पाद प्रक्षालनं कुर्यात्।

फिर यजमान 'नमोस्त्वनन्ताय' मंत्र को पढ़ता हुआ ब्राह्मण के पैर धोए।

गंधपुष्पमाल्यादिभिरभ्यर्च्य ॐ अद्येत्यादिनवग्रहमखहोमकर्मणि न्यूनाधिक संरक्षणार्थमेभिश्चंदनतांबूलकुण्डलांगुलीयककमण्डलु भिर्ब्रह्मत्वे नामुकगोत्रममुकशर्माणममुकवेदाध्यायिनं त्वामहं वृणे।

तदनंतर गंध, पुष्प, चंदनादि से यजमान ब्राह्मण का पूजन करे और उपर्युक्त विधि से ब्रह्मा का वरण करते हुए कहे—मैं आपको इस यज्ञ के निरीक्षणार्थ ब्रह्मा रूप से वरण करता हूँ।

(ब्राह्मणः) वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्।

ब्राह्मण कहे—मैं आपका वरण स्वीकार करता हूँ।

(यजमानः) यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरः प्रभुः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिंब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥

यजमान हाथ जोड़कर ब्रह्मा से निवेदन करे—हे विप्रवर! जैसे चतुर्मुख ब्रह्मा चारों वेदों को धारण करने में समर्थ हैं, वैसे ही आप मेरे यज्ञ में ब्रह्मा हों।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥
इत्यनेन मंत्रेण कुशस्थैर्जलबिंदु भिर्यजमानमभिषिञ्चेत॥

तदनंतर ब्रह्मा 'ॐ व्रतेन....... सत्यमाप्यते' मंत्र पढ़कर कुशयुक्त जलबिंदुओं से यजमान का अभिसिंचन करे।

अथ ऋत्विग्वरण

ऋत्विजं प्रति यजमानो ब्रूयात्-इदमासनमास्यताम्।

आसन देकर यजमान ऋत्विक् से कहे कि आसन है, इस पर बैठिए। **(ऋत्विक्) आस्ये।**

ऋत्विक् बोले—मैं बैठता हूँ।

ततो यजमानः नमोऽस्त्वनंतायेति मंत्रेण पादप्रक्षालनं कुर्यात्।

आसन पर बैठाकर यजमान 'नमोस्त्वनन्ताय' मंत्र पढ़ते हुए ऋत्विक् के पाद प्रक्षालन करे।

ॐ अद्येत्यादिनवग्रहमखहोमकर्मणि हवनं कर्तुं भिश्चंदन-तांबूलकुण्डलांगुलीयककमण्डलुवासोभिः ऋत्विक्त्वेन मे अमुकगोत्रममुकशर्माणममुकवेदाध्यायिनं त्वामहं वृणे।

तब यजमान चंदन, पुष्पादि से उनका वरण करके उसी समय कहे—मैं आपको हवन करने के लिए ऋत्विग्भाव से स्वीकार करता हूँ।

(ऋत्विक्) वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्।

ऋत्विक् कहे—मुझे स्वीकार है।

(यजमानः) ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षः गायत्र्याः सोमदैवतः। आत्रिगोत्रस्तु विप्रेंद्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव॥

यजमान कहे—हे द्विजश्रेष्ठ! यज्ञ में आप मेरे 'ऋत्विक्' होइए।

(ऋत्विक्) ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥
इत्यनेन मंत्रेण कुशस्थैर्जलबिंदुभिर्यजमानमभिषिञ्चेत्।
एवमध्वर्यु होतारं सदस्यमुपद्रष्टारं च वृणुयात्॥

ऋत्विक् 'ॐ व्रतेन........सत्यमाप्यते' मंत्र पढ़कर यजमान पर कुशा से जल छिड़के।

इसी प्रकार अध्वर्यु, होता, सदस्य और उपदेष्टा सबका वरण करे।

निम्नलिखित मंत्र से यजमान आचार्यादि सब की प्रार्थना करे। अथ सर्वेषां प्रार्थना—

त्वन्न गुरुः पिता माता त्वं प्रभुस्त्वं परायणः।
त्वत्प्रासादाच्च विप्रर्षे सर्वं मे स्यान्मनोगतम्॥ १॥
आपद्विमोक्षणार्थाय कुरु यज्ञमतन्द्रितः।
ऋत्विग्भिः सहितैः शुक्लैः संयतैः सुसमाहितैः॥ २॥
आचार्येण च संयुक्तः कुरु कर्म यथोदितम्।
भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर॥ ३॥
वितते मम यज्ञेऽस्मिनुपद्रष्टा भव द्विज।

इसके बाद 'येन बद्धो' इत्यादि मंत्र से यजमान के दाहिने हाथ में रक्षा-सूत्र बाँधे। यजमान के ही शरीर के बराबर रक्षा-सूत्र होना चाहिए।

रक्षा-सूत्र

यह वरण सूत्र है इसे आचार्य की ओर से प्रतिनिधियों द्वारा बाँधा जाना चाहिए। इसके लिए स्वयंसेवक भेजे जाएँ। यह पुरुषों तथा अविवाहित कन्याओं के दाएँ हाथ में तथा महिलाओं के बाएँ हाथ में बाँधा जाता है। जिस हाथ में कलावा बाँधें उसकी मुट्ठी बँधी हो, दूसरा हाथ सिर पर हो। इस पुण्य कार्य के लिए व्रतशील बनकर उत्तरदायित्व स्वीकार करने का भाव रखा जाए।

ॐ येन बद्धो बली राजा दानवेंद्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे चल मा चल॥

कलश स्थापना-पूजन

पूजा पीठ पर कलश रखा जाता है। यह धातु का होना चाहिए। कंठ में कलावा बँधा, पुष्पों से सुसज्जित व जल से

Scanned with CamScanner

दीप पूजन

कलश के साथ दीपक भी पूजन की वेदी पर रखा जाता है। इसे सर्वव्यापी चेतना का प्रतीक मानकर पूजना चाहिए। वैज्ञानिक भी यह स्वीकार करने लगे हैं कि मूलतः चेतना से पदार्थ बना है, पदार्थ से चेतना नहीं। उस महाचेतना ज्योतिरूप, परमप्रकाश का पूजन-आराधन दीपक के माध्यम से करें। मंत्र—

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।

इति मंत्रेण कलशसमीपे पूर्वदिशि एकस्मिन् पात्रे दीपं निदध्यात्॥

गणेश-गौरी पूजन

कलश-पूजन के साथ गणेश-गौरी पूजन की भी परंपरा अनेक स्थानों पर पाई जाती है। वास्तव में यह संक्षिप्तीकरण की पद्धति है। कलश पूजन के साथ गणपति को सभी देव शक्तियों का प्रतिनिधि तथा गौरी को सभी मातृ शक्तियों का प्रतीक मानकर पूजन कर लिया जाता है। उस स्थिति में क्रमशः 'गुरुतत्व' का **गुरुर्ब्रह्मा**.....'आद्यशक्ति गायत्री' को **आयातु वरदे देवि**...... 'गणपति' का **अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं** तथा 'गौरी' का **सर्व मंगल मांगल्ये** मंत्र से आवाहन करके पंचोपचार पूजन करा देना चाहिए।

पुरुष सूक्त

पुरुष सूक्त का प्रयोग विशेष पूजन के क्रम में किया जाता है। षोडशोपचार पूजन के एक-एक उपचार के साथ क्रमशः एक-एक मंत्र बोला जाता है। जहाँ कहीं भी किसी देवशक्ति का पूजन विस्तार से करना हो तो पुरुष सूक्त के मंत्रों के साथ षोडशोपचार पूजन करा दिया जाता है। पंचोपचार पूजन में भी इस सूक्त से संबंधित मंत्रों का प्रयोग किया जा सकता है। यज्ञादि के विस्तार, देव पूजन में पर्वों पर, पर्व से संबंधित देवशक्ति के पूजन में बहुधा इसका प्रयोग किया जाता है। वातावरण में पवित्रता और श्रद्धा के संचार के लिए भी पुरुष सूक्त का पाठ सधे हुए कंठ वाले व्यक्ति सामूहिक रूप से करते हैं।

पुरुष सूक्त में परमात्मा की विराट सत्ता का वर्णन किया गया है। उस महान चेतना के विस्तार के संकल्प से ही इस जड़-चेतन की सृष्टि हुई है। किसी भी प्रतीक देव-विग्रह का पूजन करते हुए यही चिंतन उभरता रहता है कि हम उसी एक विराट सनातन अविनाशी का पूजन कर रहे हैं।

पुरुष सूक्त से पूजन प्रारंभ कराने के पूर्व उपस्थित श्रद्धालुओं को उक्त सिद्धांत बतलाया जाना चाहिए, ताकि पूजन में उनका भी भाव-संयोग हो सके। यदि संभव हो तो सभी के हाथ में अथवा पूजन-केंद्र के निकटवर्ती प्रतिनिधियों के हाथ में अक्षत-पुष्प दे देने चाहिए। उसे पूरे पूजन के साथ हाथ में रखें, भाव-पूजन में सम्मिलित रहें और अब वे पुष्पांजलि के साथ उन्हें अर्पित करें। भावना करें कि हमारे पास जो कुछ भी है, उसी का दिया हुआ है। उसके विराट स्वरूप एवं उद्‌देश्यों को हम पहचानें और उनके निमित्त अपने साधनों व क्षमताओं को अर्पित करते हुए उन्हें सार्थक करें, धन्य बनाएँ। उस सर्वव्यापी को, उसके आदर्शों को हर कदम पर, हर स्तर और हर प्रसंग में प्रत्यक्ष की तरह देखते हुए श्रद्धासिक्त होकर पूजन-भाव से सक्रिय रहें। उसके दिए साधनों को उसके उद्‌देश्यों में लगाने में कृपणता न बरतें और उदार भक्ति-भावना का परिचय-प्रमाण दें।

संबंधित सामग्री हाथ में लेकर मंत्र बोला जाए। मंत्र पूरा होने पर जिस देवशक्ति का पूजन है, उसका नाम लेते हुए षोडशोपचार के आधार पर स्थापयामि, समर्पयामि, आदि कहते हुए उसे चढ़ाते चलें।

अथ पुरुष सूक्तम्

(१) आवाहनम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिꣳ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥

(२) आसनम्

ॐ पुरुषऽएवेद ꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

(३) पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

(४) अर्घ्यम्

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽ उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥

(५) आचमनम्

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधिपूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥

(६) स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।

(७) वस्त्रम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे
छन्दा ꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।

(८) यज्ञोपवीतम्

ॐ तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽ अजावयः॥

Scanned with CamScanner

(९) गंधम्

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽअयजंत साध्याऽ ऋषयश्च ये॥

(१०) पुष्पाणि

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥

(११) धूपम्

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳫं शूद्रो अजायत॥

(१२) दीपम्

ॐ चंद्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥

(१३) नैवेद्यम्

ॐ नाभ्याऽ आसीदंतरिक्ष ᳫं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन्॥

(१४) तांबूल पुंगीफलानि

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसंतोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मःशरद्धविः॥

(१५) दक्षिणा

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषं पशुम्॥

(१६) मंत्र पुष्पांजलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजंत देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचंत यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

(यजु० ३१/१-१६)

षोडशोपचार देव पूजन

देव पूजन के लिए षोडशोपचार-विधान प्रसिद्ध है। यों पंचोपचार, दशोपचार व अष्टादशोपचार भी होते हैं। पूजन के लिए जितने प्रकार का पूजन-विधान प्रयुक्त किया जाए, उसे उपचार कहते हैं। पंचोपचार में (१) गंध, (२) पुष्प, (३) धूप, (४) दीप, (५) नैवेद्य—ये पाँच हैं। दशोपचार में (१) पाद्य, (२) अर्घ्य, (३) स्नान, (४) मधुपर्क, (५) आचमन, (६) गंध, (७) पुष्प, (८) धूप, (९) दीप, (१०) नैवेद्य हैं। षोडशोपचार में (१) आसन, (२) स्वागत, (३) पाद्य, (४) अर्घ्य, (५) आचमन, (६) मधुपर्क, (७) पुनराचमन, (८) स्नान, (९) वस्त्र, (१०) आभूषण, (११) गंध, (१२) पुष्प, (१३) धूप, (१४) दीप, (१५) नैवेद्य, (१६) चंदन—ये हैं। अष्टादशोपचार में (१) आसन, (२) आवाहन, (३) स्नान, (४)आरती, (५) वस्त्र, (६) आचमन, (७) यज्ञोपवीत, (८) पुनराचमन, (९) आभूषण, (१०) दर्पण, (११) गंध, (१२) पुष्प, (१३) धूप, (१४) दीप, (१५) नैवेद्य, (१६) तांबूल, (१७) इत्र आदि सुगंध लेपन, (१८) स्तुति—ये १८ उपचार हैं।

अनेक पूजन-ग्रंथों तथा आचार्यों के अनुसार इनमें थोड़े-थोड़े हेर-फेर भी हैं। पुरुष देवताओं तथा स्त्री देवताओं के लिए पूजन-सामग्री, क्रम तथा मंत्रों में भी कुछ हेर-फेर है। वैदिक विधान के अनुसार पुरुष देवताओं का षोडशोपचार पूजन 'पुरुष सूक्त' के १६ मंत्रों से तथा स्त्री देवताओं का षोडशोपचार पूजन 'श्री सूक्त' के १६ मंत्रों से किया जाता है। चूँकि इन पृष्ठों में हम स्मार्त-विधि की हवनपद्धति का उल्लेख कर रहे हैं, इसलिए यहाँ स्मार्त श्लोकों से ही पूजन-मंत्रों का विधान दिया गया है। इसी प्रकार षोडशोपचार के १६ विधानों में जो हेर-फेर हैं, उनमें से जो १६ उपचार अधिक उपयुक्त जँचे हैं, उन्हीं का वर्णन किया गया है। इस प्रकार देव शक्तियों एवं अतिथियों के पूजन-सत्कार के जो १६ उपचार भारतीय संस्कृति में प्रचलित हैं, उनमें अपनी स्थिति तथा अतिथि के स्तर के अनुरूप स्वागत उपचारों का निर्धारण किया जाता रहा है। देव-पूजन प्रसंग में दो बातें ध्यान रखने योग्य हैं—देवताओं को पदार्थ की आवश्यकता नहीं, इसलिए उन प्रसंगों में उपेक्षा एवं प्रमाद न बरता जाए। कोई संपन्न और सम्माननीय अतिथि अपने यहाँ आएँ तो 'उन्हें क्या कमी?' कहकर उन्हें आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराने में उपेक्षा नहीं बरती जाती। जो है, उसे भावनापूर्वक, सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। ऐसी ही सावधानी देव पूजन के प्रसंग में रखी जाए।

देवताओं को पदार्थों की भूख नहीं है। पदार्थों के समर्पण द्वारा जो भावना व श्रद्धा व्यक्त होती है, देवता उसी से संतुष्ट होते हैं। यह ध्यान में रखकर अच्छे पदार्थ देकर देवताओं पर एहसान का भाव नहीं आने देना चाहिए। श्रद्धा भरे समर्पण को प्रमुख मानकर उसे बनाए रखना आवश्यक है। अभाववश पदार्थों में कमी रह जाए तो उसकी पूर्ति भावना द्वारा हो जाती है। यों तो सामान्य क्रम में भी किसी गृह-आँगन अतिथि के दर्शन होते ही उसे हाथ जोड़कर नमस्कार किया जाता है। इसके अनंतर भारतीय शिष्टाचार में सम्माननीय अतिथि का सत्कार सोलह प्रकार से किया जाता है—(१) आवाहन—आइए, पधारिए कहकर सत्कार करना। (२) आसन—पर बैठने के लिए चौकी, कुरसी आदि देना। (३) पाद्य—थकान दूर करने के लिए पैर धुलाना। (४) अर्घ—मुँह-हाथ धुलाना। (५) आचमन—जल पिलाना। (६) स्नान—दूर से आए थके-माँदे के लिए स्नान की व्यवस्था करना। (७) वस्त्र—यात्रा के मैले वस्त्रों को धुलवाने का प्रबंध करना। (८) यज्ञोपवीत—श्रेष्ठ सांस्कृतिक उपहार। (९) गंध—सुगंधित

Scanned with CamScanner

तेल, चंदन आदि। (१०) पुष्प—फूल, गुलदस्ता, माला आदि भेंट करना। (११) धूप—अगरबत्ती आदि जलाना। (१२) दीप—आरती उतारना व दीपक जलाना। (१३) नैवेद्य— जल-पान व भोजन। (१४) तांबूल—सौंफ, सुपारी, आदि मुखशुद्धि। (१५) प्रदक्षिणा—ठहरने के स्थान तक साथ चलकर जाना, सुविधा की देख-रेख। (१६) मंत्र पुष्पांजलि—कुशल प्रश्न, मधुर भाषण, आगमन की प्रसन्नता-अभिव्यक्ति, विचार-विनमय।

प्राचीनकाल में द्रुतगामी वाहन न होने के कारण पैदल या मंदगामी वाहनों से यात्रा करनी पड़ती थी। उन दिनों थकान उतारने के लिए इतना शिष्टाचार आवश्यक था। फिर देव शक्तियाँ तो सुदूर अंतरिक्ष की यात्रा करके यज्ञशाला तक पधारी हैं, यह भावना की जाती है। इस पूजा-सत्कार-विधान में उनके प्रति अपनी आस्था, कृतज्ञता, स्वागत, प्रसन्नता, सम्मान की अभिव्यक्ति का श्रद्धासिक्त भाव रखना अनिवार्य है।

यजुर्वेदोक्त पुरुष सूक्त के १६ मंत्र इस षोडशोपचार-प्रक्रिया के लिए काम में लाए जाते हैं। एक-एक करके क्रमशः एक-एक मंत्र इन सोलहों प्रयोजनों में काम में लाया जाता है। यदि समय हो तो उन सोलह मंत्रों को काम में लाना चाहिए। एक-एक मंत्र बोलते हुए एक-एक वस्तु समर्पित करनी चाहिए। यदि समय की कमी हो तो 'समर्पयामि' वाला वाक्य बोलकर संक्षेप में पूजन भी किया जा सकता है। दोनों में से कोई एक प्रक्रिया अपना लेनी चाहिए।

यज्ञ में वस्तुतः एक यज्ञपुरुष भगवान की ही स्थापना-पूजा है। देव शक्तियाँ तो उसी के विभिन्न स्पंदन हैं। पूजन, सत्कार, नमस्कार एक बार ही करने में संपूर्ण देवताओं का पूजन हो जाता है।

भगवान एक ही हैं। वे न नर हैं, न नारी अथवा दोनों ही हैं। अस्तु, इनके पूजन में नर की दृष्टि से पुरुष सूक्त और नारी की दृष्टि से श्रीसूक्त का भेद करने की आवश्यकता नहीं है। एकमात्र पुरुष सूक्त ही भगवान के नर रूप या नारी रूप के पूजन में प्रयुक्त करना चाहिए।

जलपात्र, चमची एवं पूजा-सामग्री एक थाल में रहनी चाहिए। एक दूसरी छोटी तश्तरी में पूजा की सामग्री मंत्रोच्चार के बाद छोड़ी जाए। आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ, आचमन, स्नान, इन छह कार्यों के लिए एक-एक करके छह चमची जल छोटी तश्तरी में डालना चाहिए। यज्ञोपवीत पूरा रखा जाए, जो पीछे प्रसादरूप यज्ञकर्त्ता के काम आ जाए। गंध, अगरबत्ती जलाई जाए व पुष्प चढ़ाए जाएँ। दीपक पहले से ही जला रखा होगा, हाथ से उस ओर संकेत कर दिया जाए। नैवेद्य—कोई ऋतुफल मेवा या बताशे रख दिए जाएँ; चावल से भी काम चल सकता है, वह भी नैवेद्य है। तांबूल—सौंफ, सुपारी, पान की जरूरत नहीं है। आसाम-बंगाल में सुपारी को ही तांबूल कहते हैं। पान खरचीला भी है और विलासिता का चिह्न भी। प्रदक्षिणा आँखें बंद करके उनके साथ चलने का ध्यान। मंत्र-पुष्पांजलि, मधुर भाषण के प्रतीक पुष्प या गुलदस्ता भेंट करना।

पंचोपचार

समय की कमी या संक्षिप्तीकरण की दृष्टि से पंचोपचार-पूजन से भी काम चल सकता है। पंचोपचार में पाँच सत्कार ये हैं—(१) आवाहन, (२) आचमन, (३) गंध, (४) पुष्प, (५) नैवेद्य।

इनमें आवाहन-आचमन के लिए जल की चमची दो बार छोड़ी जाए और चंदन, पुष्प व नैवेद्य (चावल) इन्हें समर्पित किया जाए और (१) आवाहयामि, (२) आचमनम् समर्पयामि, (३) गंधान् समर्पयामि, (४) पुष्पाणि समर्पयामि, (५)नैवेद्यम् समर्पयामि, यह उच्चारण किया जा सकता है। पुरुष सूक्त से पंचोपचार-पूजन करना हो तो (१) आवाहन के लिए सहस्रशीर्षा० (२) आचमन के लिए ततो विराड० (३) गंध के लिए तं यज्ञं० (४) पुष्प के लिए यत् पुरुषं० (५) नैवेद्य के लिए नाभ्यां० मंत्र बोलने चाहिए।

पुरुष सूक्त मंत्रों में विराट ब्रह्मांड के रूप में विश्वात्मा भगवान का वर्णन है। अर्जुन को कृष्ण ने और कौशल्या को राम ने अपने जिस विराट रूप के दर्शन कराए थे, उसका वर्णन, प्रतिपादन पुरुष सूक्त के इन १६ मंत्रों में है। इनके पठन-पाठन, उच्चारण एवं विवेचन से विश्वरूप भगवान की भक्ति करने की वास्तविक प्रक्रिया, लोक-मंगल में निरत होने की भावना जाग्रत होती है। इस संसार को सुंदर, सुसज्जित, समुन्नत, सुविकसित व सुखी बनाने के लिए जो प्रयत्न-पुरुषार्थ या त्याग-अनुदान प्रस्तुत किया जाता है, भगवान का वास्तविक पूजन वही है। षोडशोपचार अथवा पंचोपचार प्रतीक-पूजा में उस विराट पुरुष की सेवा-साधना में निरत होकर यथार्थ पूजा-भक्ति करने की प्रेरणा है।

षोडशोपचार पूजन

यदि समय कम हो तो निम्न वाक्यों से ही पूजन करें, अन्यथा पुरुष सूक्त के मंत्रों के बाद क्रमशः ये वाक्य बोलते हुए पूजन कराया जाए—

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः

आवाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥
आसनं समर्पयामि ॥ २ ॥
पाद्यं समर्पयामि ॥ ३ ॥
अर्घ्यं समर्पयामि ॥ ४ ॥
आचमनं समर्पयामि ॥ ५ ॥

Scanned with CamScanner

स्नानं समर्पयामि ॥६॥
वस्त्रं समर्पयामि ॥७॥
यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥८॥
गंधं विलेपयामि ॥९॥
अक्षतान् समर्पयामि ॥१०॥
पुष्पाणि समर्पयामि ॥११॥
धूपमाघ्रापयामि ॥१२॥
दीपं दर्शयामि ॥१३॥
नैवेद्यं निवेदयामि ॥१४॥
ताम्बूलपुङ्गीफलानि समर्पयामि ॥१५॥
दक्षिणां समर्पयामि ॥१६॥
मंत्र पुष्पांजलिं समर्पयामि ॥१७॥
सर्वाभावे अक्षतान् समर्पयामि ॥१८॥

पुलिंग रूप से षोडशोपचार पूजन

आह्वान मंत्र—

आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वं सन्निधौ भव॥१॥

आसन मंत्र—

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥२॥
आसनं समर्पयामि॥

पाद्य मंत्र—

पाद्यं गृहाण देवेश सर्वक्षेमसमर्थकम्।
भक्त्या समर्पितं देव लोकनाथ नमोऽस्तु ते॥३॥
पाद्यं समर्पयामि॥

अर्घ्य मंत्र—

अर्घ्यं गृहाण देवेश गंधपुष्पाक्षतैः सह।
करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥४॥
अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमन मंत्र—

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगंधि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर॥५॥
आचमनम् समर्पयामि॥

स्नान मंत्र—

गंगासरस्वतीरेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे॥६॥
स्नानं समर्पयामि॥

वस्त्र मंत्र—

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥७॥
वस्त्रम् समर्पयामि॥

यज्ञोपवीत मंत्र—

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥८॥
यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥

गंध मंत्र—

श्रीखंडचंदनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम्॥९॥
गंधं समर्पयामि॥

पुष्प मंत्र—

पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चंपकैः।
पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्॥१०॥
पुष्पाणि समर्पयामि॥

धूप मंत्र—

वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥११॥
धूपं समर्पयामि॥

दीप मंत्र—

आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां तिरयाद्घोराद्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥१२॥
दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्य मंत्र—

नैवेद्यं गृह्यतां देव दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥१३॥
नैवेद्यं समर्पयामि॥

नमस्कार मंत्र—

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः॥
नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥१४॥

प्रदक्षिणा मंत्र—

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे-पदे॥१५॥

दक्षिणा मंत्र—

पूजा फल समृध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्॥
न्यूनातिरिक्त पूजायां संपूर्णफलहेतवे।

Scanned with CamScanner

दक्षिणां कांचनी देव स्थापयामि तवाग्रतः॥ १६॥
दक्षिणां समर्पयामि॥

स्त्री रूप से षोडशोपचार पूजन

आह्वान मंत्र—

ॐ आगच्छेहमहादेवि ! सर्वसंपद्प्रदायिनी।
यावद्व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधा भव॥
अथवा
ॐ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकर प्रिये॥ १॥

आसन मंत्र—

अनेकरत्न संयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥ २॥

पाद्य मंत्र—

गंगादि सर्व तीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ ३॥

अर्घ्य मंत्र—

निधीनां सर्व रत्नानां त्वमनर्घ्यगुणा ह्यसि।
सिंहोपरिस्थिते देवि! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥ ४॥

आचमन मंत्र—

कर्पूरेणसुगंधेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवि ! त्वं प्रतिगृह्यताम्॥ ५॥

स्नान मंत्र—

मंदाकिन्याः समानीतैर्हेमांभोरुहवासितैः।
स्नानं कुरुष्व देवेशि! सलिलैश्च सुगंधिभिः॥ ६॥

वस्त्र मंत्र—

दुकूल युगं देवि ! कंचुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गे दुर्गतिनाशिनि॥ ७॥

कंचुक मंत्र—

स्वर्ण सूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि॥ ८॥

अक्षत मंत्र—

अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान्।
गृहाणेमान्महादेवि ! देहि मे निर्मलां धियम्॥ १०॥

धूप मंत्र—

दशांगगुग्गुलं धूपं चंदनागरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या देवि ! धूपं प्रतिगृह्यताम्॥ १२॥

दीप मंत्र—

घृतवर्ति समायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम्।
दीपं दास्यामि देवेशि ! सुप्रीता भव सर्वदा॥ १३॥
दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्य, फल, तांबूल मंत्र—

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि ! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥
द्राक्षा खर्जूर कदली पनसाम्र कपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजंस्वादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥
एला लवंग कस्तूरी कर्पूरं पुष्पवासिताम्।
वाटिकां मुख वासार्थं समर्पयामि सुरेश्वरि॥ १४॥

दक्षिणा, नीराजन, पुष्पांजलि मंत्र—

पूजाफल समृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥
दक्षिणां समर्पयामि॥
नीराजनं सुमांगल्यं कर्पूरेण समन्वितम्।
चंद्रार्कवह्निसदृशं महादेवि ! नमोऽस्तु ते॥ १५॥
दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेषजंतोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दरिद्र्यदुःख भयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचिता॥ १६॥

अथ नवग्रह-स्थापना एवं पूजन

सूर्यावाहन—

रक्त पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा आवाह्यः। ॐ सप्तम्यां विशाखान्वितायां कलिंगजातं कश्यपगोत्रं लोहितवर्णं वर्तुलाकृति मंडलमध्यस्थं प्राङ्मुखं द्विभुजं पद्महस्तं सप्ताश्वरथवाहनं क्षत्रियाधिपतिमीश्वराधिदैवतमग्निं प्रत्यधिदैवतसहितं सूर्यमावाहयामि ।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष।

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरि सर्व पापाघ्नं सूर्यमावाह्याम्यहम्॥ इत्यावाह्य॥

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ पद्मासन पद्मकरः पद्मगर्भसमद्युतिः। सप्ताश्चः सप्तरज्जुश्च द्विभुज स्यात्सदा रविः॥ इति मंत्रेण पाद्यादिभिः सूर्यं संपूज्यानेनैव मंत्रेण रक्त पताका दानम्। इति सूर्य पूजनम्॥ १॥

अग्नि-स्थापना के बाद नवग्रहों का पूजन करें; यथा-यजमान हाथ में लाल फूल और अक्षत लेकर 'सप्तम्याम् से 'सूर्यमावाहयाम्यहम्' तक मंत्र पढ़कर सूर्य का आवाहन करे और कहे कि हे सूर्य भगवान! यहाँ आइए, मेरे इस यज्ञ में स्थित हो इसकी रक्षा कीजिए। (इसी प्रकार नव ग्रहों के आवाहन में भी कहना आवश्यक है)। तत्पश्चात 'ॐ आकृष्णेन' इत्यादि मंत्र को पढ़कर गंधादि से सूर्य देवता की विधिवत् पूजा करे, फिर पुनः इसी मंत्र से लाल पताका दान दे।

Scanned with CamScanner

चंद्रावाहन—

श्वेतपुष्पाक्षतान् गृहीत्वाऽऽवाहयेत्। ॐ चतुर्दश्यां कृत्तिकान्वितायां समुद्रजातमत्रिगोत्रं श्वेतवर्णं चतुरस्राकृतिं मंडलात्पूर्वं दक्षिणदिक्स्थं पश्चिमाभिमुखं दशाश्वरथवाहनं निशापतिमुमाधिदैवतं जलप्रत्यधिदैवतसहितं चंद्रमावाहयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः चंद्र इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष।

दधिशंतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। ज्योत्स्ना पतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥ इत्यावाह्य॥

ॐ इमं देवाऽअसपत्नाᳬसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेंद्रस्येंद्रियाय॥ इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ᳬ राजा॥

श्वेतः श्वेताम्बरधरो दशाश्वः श्वेतभूषणः। गदा-पाणिर्द्विबाहुश्च कर्त्तव्यो वरदः शशी॥ इति मंत्रेण पाद्यादिभिश्चंद्रं संपूज्यानेनैव मंत्रेण श्वेतपताकादानम्॥ इति चंद्र पूजनम्॥ २॥

यजमान सफेद फूल-अक्षत लेकर 'ॐ चतुर्दश्यां से सोममावाहयाम्यहम्' तक मंत्र पढ़कर चंद्रमा का आवाहन करके 'ॐ इमं देवा से वरदः शशीः' तक मंत्र पढ़कर पाद्यादि से विधिवत् चंद्रमा की पूजा करें और इन्हीं उपर्युक्त मंत्रों से सफेद पताका दान करें।

भौमावाहन—

रक्त पुष्पाक्षतान्गृहीत्वा आवाहयेत। ॐ दशम्यां पूर्वाषाढान्वितायामवंतीजातं (अयोध्याजातं) भारद्वाजगोत्रं रक्त वर्णं त्रिकोण मंडलाद्दक्षिण दिग्विभागस्थं दक्षिणाभिमुखं मेष वाहनं क्षत्रियाधिपतिं स्कंदाधिदैवतं क्षितिप्रत्यधि दैवत सहितं भौममावाहयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः भौम इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष।

धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्तेजसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥ इत्यावाह्य॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवङःककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ᳬ रेता ᳬ सि जिन्वति॥

रक्तामाल्याम्वरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजो मेषगो वदः स्याद्धरासुतः॥ इति मंत्रेण पाद्यादिभिः भौमं संपूज्य, अनेनैव मंत्रेण रक्तपताकादानम्॥ इति भौम पूजनम्॥ ३॥

यजमान लाल फूल और अक्षत लेकर 'ॐ दशम्यां से भौमवाहयाम्यहम्' तक मंत्र पढ़कर भौम का आवाहन करें तत्पश्चात ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः से लेकर स्याद्धरासुतः तक मंत्र पढ़कर पाद्यादि से विधिवत् भौम की पूजा करें तथा इसी पूर्वोक्त मंत्र से लाल पताका दान करें।

बुधावाहन—

हरित्पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा आवाहयेत्। ॐ द्वादश्यां धनिष्ठान्वितायां मगधदेशजातमत्रिगोत्रं हरिद्वर्णं बाणाकृतिं मण्डलात्पूर्वोत्तरस्थममुत्तराभिमुखं सिंहवाहनं नारायणाधिदैवतं विष्णु प्रत्यधिदैवतसहितं बुधमावाहयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः बुध इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष।

प्रियंगुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्य गुणोपेतं बुधमावाहयाम्हम्॥ इत्यावाह्य॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳬसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

पीतमाल्यांबरधरः कर्णिकारसमद्युतिः खड्गचर्म गदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥ इति मंत्रेण पाद्यादिभिर्बुधं संपूज्य अनेनैव मंत्रेण हरित्पताकादानम्॥ इति बुध पूजनम्॥ ४॥

हरे रंग के फूल और अक्षत लेकर ॐ द्वादश्यां से लेकर बुधमावाहयाम्यहम् तक मंत्र पढ़कर बुध देवता का आवाहन करें और 'ॐ उद्बुध्य' इत्यादि मंत्र पढ़कर पाद्यादि से पूजन कर इसी मंत्र से हरे रंग की पताका दान करें।

गुर्वावाहन—

पीत पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा आवायेत्त्। ॐ एकादश्यामुत्तरा फाल्गुनीयुतायां सिंधु देशजात- मांगिरसगोत्रं गोरोचनाभं दीर्घ चतुष्कोणाकृति मंडला दुत्तरस्थितमुत्तराभिमुखं सिंहवाहनं ब्रह्मादिदैवतमिंद्र प्रत्यधिदैवतसहितं गुरुमावाहयामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गुरो इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष।

देवानां च मुनीनां च गुरुकांचनसन्निभम्। वंद्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥ इत्यावाह्य॥

ॐ बृहस्पतेअति यदर्योअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऋत प्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इति मंत्रेण पाद्यादिभिः गुरुं संपूज्य अनेनैव मंत्रेण पीतपताकादानम्॥ इति गुरु पूजनम्॥ ५॥

पीला फूल और अक्षत लेकर 'ॐ एकादश्यां से लेकर गुरुमावाहयाम्यहम्' तक मंत्र पढ़कर गुरुदेव का आवाहन करें और 'ॐ बृहस्पते' इत्यादि मंत्र को पढ़कर पाद्यादि से विधिवत् पूजन करें तथा इसी मंत्र से पीत पताका दान करें।

शुक्रावाहन—

श्वेतपुष्पाक्षतान् गृहीत्वा आवाहयेत्। ॐ नवम्यां पुष्ययुतायां भोजकटे जातं भार्गवगोत्रं शुक्लवर्णं पंचकोणं मंडलात्पूर्वदिक्स्थं पूर्वाभिमुखं श्वेताश्ववाहन मिंद्राधि दैवतमिन्द्राणी प्रत्यधिदैवत सहितं शुक्रमावाहयामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष।

Scanned with CamScanner

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥ इति आवाह्य।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रंपयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेनॅ सत्यमिन्द्रियं विपान शुक्रमंधसऽइन्द्रस्येंद्रिय मिदं पयोऽमृतं मधु ॥

देव दैत्यगुरु तद्वत् पतिश्वेतौ चतुर्भुजौ। दंडिनी वरदौ कार्यौ साक्षासूत्र कमण्डलु॥

इति मंत्रेण पाद्यादिभिः शुक्रं संपूज्य अनेनैव मंत्रेण श्वेतपताकादानम्॥ इति शुक्र पूजनम्॥ ६॥

सफेद फूल और अक्षत लेकर 'ॐ नवम्यां से लेकर शुक्रमावाहयाम्यहम्' तक मंत्र पढ़कर शुक्र का आवाहन करें। तत्पश्चात 'ॐ अन्नात्परिस्रुतौ' इत्यादि मंत्र पढ़कर पाद्यादि से पूजन करें तथा इसी मंत्र से सफेद पताका दान करें।

शन्यावाहन—

बिल्वपत्राक्षतान् गृहीत्वा आवाहयेत्। ॐ अष्टम्यां रेवतीयुतायां सौराष्ट्रजातं काश्यपगोत्रं लौहवर्णं धनुराकृतिं मण्डलात्पश्चिमस्थं पश्चिमाभिमुखं गृध्रवाहनम् संकरजातिं यमाधिदैवतं प्रजापतिप्रत्यधिदैवतसहितं शनिमावाहयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः शने इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष।

नीलांबुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसंभूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥ इति आवाह्य।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः।
बाणाबाणासनधरः कर्त्तव्योऽर्कसुतः सदा॥

इति मन्त्रेणपाद्यादिभिः शनिं संपूज्य अनेनैव मन्त्रेण कृष्णपताका दानम्। इति शनि पूजनम् ॥ ७॥

बिल्वपत्र तथा अक्षत लेकर 'ॐ अष्टम्यां से शनि मावाहयाम्यहम्' तक मंत्र पढ़कर शनि का आवाहन करें और फिर 'ॐ शन्नो देवी' इत्यादि मंत्र पढ़कर पाद्यादि से पूजन करें तथा इसी मंत्र से काले रंग की पताका का दान करें।

राह्वावाहन—

कृष्णपुष्पाक्षतान् गृहीत्वा आवाहयेत्। ॐ पौर्णमास्यां भरणीयुतायां बर्बरजातं पैठीनसिगोत्रं कृष्णवर्णं शूर्पाकृतिं मंडलात्पश्चिमदक्षिण दिक्स्थं दक्षिणाभिमुखं शूद्राधिपतिं सिंहवाहनं कालाधिदैवतं सर्पप्रत्यधिदैवत सहितं राहुमावाहयाम्यहम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः राहो इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष।

अर्द्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिका गर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्॥ इत्यावाह्य॥

ॐ कयानश्चित्र ऽआ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ्या वृता॥

करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः।
नीलः सिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते॥

इति मंत्रेण पाद्यादिभिः राहुं संपूज्यानेनैव मंत्रेण कृष्ण पताकादानम्॥ इति राहु पूजनम्॥ ८॥

काले फूल और अक्षत लेकर 'ॐ पौर्णमास्यां से राहुमावाहयाम्यहम्' तक मंत्र पढ़कर राहु का आवाहन करें तथा 'ॐ कयानश्चित्र' इत्यादि मंत्र से पाद्यादि से विधिवत् पूजन करें तथा इसी मंत्र से काली पताका का दान करें।

केत्वावाहन—

कृष्णपुष्पाक्षतान् गृहीत्वा आवाहयेत्। ॐ अमावस्यायामाश्लेषान्वितायां जातं जैमिनिगोत्रं धूम्रवर्णं ध्वजाकृतिं कपोतवाहनमन्त्यजाधिपतिं मंडलात्पश्चिमोत्तरस्थं दक्षिणाभिमुखं चित्रगुप्ताधिदैवतं ब्रह्मप्रत्यधिदैवतसहितं केतुमावाहयाम्यहम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः केतो इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष।

पलाल धूम्रसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्, रौद्रंरौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्हम्॥ इत्यावाह्य॥

ॐ केतुं कृणवन्नकेतवे पेशो मर्याऽअपेशसे। समुषद्भिर जायथाः॥

धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गहिनो विकृताननाः।
गृधासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरदप्रदाः॥

इति मंत्रेण पाद्यादिभिः केतुं संपूज्यानेनैव मंत्रेण धूम्र पताकादानम्॥ इति केतु पूजनम्॥ ९॥

काले फूल और अक्षत लेकर 'ॐ अमावस्यायाम् से लेकर केतुमावाहयाम्यहम्' तक मंत्र पढ़कर केतु का आवाहन करें एवं 'ॐ केतु' इत्यादि मंत्र पढ़कर पाद्यादि से विधिवत् पूजन करें तथा इसी मंत्र से धूम्र रंग की पताका दान करें।

प्रार्थना—

(अंजलि बाँध प्रार्थना करें)

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरांतकारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः,
सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवन्तु॥

गायत्री-आवाहन—

गायत्री के चित्र, मूर्ति, प्रतिमा, अग्नि अथवा जलपात्र को गायत्री माता का प्रतीक मानकर उनका आवाहन करना

Scanned with CamScanner

चाहिए। शांत चित्त से गायत्री माता की छवि का ध्यान करते हुए निम्नलिखित आवाहन मंत्र पढ़ना चाहिए—

ॐ आयातु वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छंदसां माताः ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥

छह दिशाओं में देव-स्थापन तथा पूजन

जो देवशक्तियाँ जिस दिशा में प्रतिष्ठित हैं, उनका पूजन उसी दिशा में किया जाता है। सर्वतोभद्र में प्रतिष्ठित देवताओं के अतिरिक्त कुछ विशेष देवताओं की स्थापना इन विशेष दिशाओं में की जाती है—

पूर्व में पंचोंकार; अग्निकोण में द्वादश गणेश; नैर्ऋत में वास्तु; वायव्य में योगिनी तथा क्षेत्रपाल; उत्तर में षोडस मातृका, स्थल मातृका तथा घृत मातृका; ईशान में वरुण तथा नवग्रह की विशेष स्थापना है। पश्चिम में पूर्वाभिमुख होकर यजमान बैठता है और दक्षिण में उत्तराभिमुख होकर आचार्य बैठता है। इन दो दिशाओं को छोड़कर शेष छह दिशाओं में उपर्युक्त विशेष देवों की स्थापना की गई है। इनमें से कुछ देवता सर्वतो भद्र में भी आ गए हैं। फिर भी उनकी विशेष स्थापना उनकी अपनी दिशा में की जाती है। इस प्रकार दो बार स्थापना में कोई भ्रम या दोष मानने की आवश्यकता नहीं है।

जहाँ समुचित सुविधा है, वहाँ यज्ञमंडप के उपर्युक्त दिशा भागों में पूजा वेदी बनाकर अथवा चौकी स्थापित करके कलश, नारियल, अक्षत आदि मांगलिक वस्तुओं को देवस्थापन का प्रतीक मानकर वहाँ आवाहन तथा पूजनीय वस्तुओं से पूजन करते हैं। इस दिक् देव पूजन का क्रम निम्न प्रकार है—

पूर्व में पंचोंकार का पूजन करना। (अक्षत लेकर)

ॐ ब्रह्मा देवी च गायत्री तथा गोवर्द्धनेश्वरः।
पृथ्वी यज्ञपतिश्चैतान् पंचोङ्कारान्नमाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वे ब्रह्मन् दक्षिणे गायत्रि पश्चिमे गोवर्द्धनम् उत्तरे पृथिवि मध्ये च यज्ञपते इहागच्छत इहतिष्ठत। ब्रह्मादि पंचोङ्कोद्ब्रह्मभ्यो नमः ब्रह्मादि पंचोङ्कोरान् आवाहयामि स्थापयामि नमः।

अग्निकोण में वक्रतुंडादि द्वादश गणेश पूजन करना।

ॐ नमो देव गणेशाय नमस्ते विघ्ननाशक।
नमो मूषकमारूढ शुभ कर्त्रे नमोनमः।
नमः कात्यायनीपुत्र नमः परशुपाणये॥
रवेरुदयतेरूपं विद्याबुद्धिविचक्षण॥
देहि मे रूपसौभाग्यं देहि मे पुत्र संपदः॥
इच्छासिद्धिप्रदो देव यथोक्तं ते सदा शुभ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वक्रतुंडादि द्वादश मूर्ति गणप इहागच्छ इतिष्ठ। वक्रतुंडादि द्वादशमूर्तिगणपतिभ्यो नमः। वक्रतुंडादि द्वादश गणपतीन् आवाहयामि स्थापयामि नमः।

नैर्ऋत्य कोण में वास्तु पूजन कराना।

ॐ भूर्भुवः स्वः दिव्यादि ६४ योगिन्यः इहागच्छत इहतिष्ठत॥ दिव्यादि ६४ योगिनीभ्यो नमः॥ दिव्यादि ६४ योगिनीः आवाहयामि स्थापयामि नमः॥

वायव्य कोण में योगिनियों के समीप अजरादि ५० क्षेत्रपाल का पूजन कराना।

ॐ क्षेत्रपालानमस्यामि सर्वारिष्टानि पूजनान्।
अस्य यागस्य सिध्यर्थ पूजयाराधितान् मया॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अजरादि पंचाशत्क्षेत्रपालं इहागच्छत इह तिष्ठत अजरादि क्षेत्रपेभ्यो नमः। अजरादि क्षेत्रपान् आवाहयामि स्थापयामि नमः॥

उत्तर दिशा में षोडशमातृका का पूजन कराना

स्थल मातृका पूजन

ॐ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही च तथेंद्राणी चामुंडाः सप्तमातरः।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्मी माहेश्वर्यादि सप्तस्थल मातर। इहागच्छत। इह तिष्ठत। ब्राह्मी माहेश्वर्यादि सप्तस्थलमातृकाभ्यो नमः। ब्राह्मी माहेश्वर्यादि मातरः आवाहयामि स्थापयामि नमः॥

घृत मातृका पूजन

ॐ कुंड्यलग्नवसोर्द्धारा पंचधारा घृतेन तु।
कारयेत्सप्तधारा वा नातिनीचा नचोच्छ्रिताः॥ १॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा सिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्याश्च सप्तैता घृतमातरः॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्तिर्लक्ष्म्यादि सप्तघृतमातरः इहागच्छत इहतिष्ठत। कीर्तिर्लक्ष्म्यादि सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः। कीर्तिर्लक्ष्म्यादि मातर आवाहयामि स्थापयामि नमः॥

ईशान कोण में वरुण पूजन

ॐ नागपाशधरं देवं वरुणं नक्रवाहनम्।
शुद्धस्फटिकसंकाशं प्राणरूपं नमाम्यहम्॥
पाशहस्तं च वरुणमर्णसां प्रतिमीश्वरम्।
आवाहयामि यज्ञेस्मिंपूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ। वरुणाय नमः। वरुणामावाहयामि स्थापयामि नमः॥

ईशान कोण में सूर्यादि नवग्रह पूजन कराना

ॐ शिवोगौरीतथास्कंदो विष्णुर्ब्रह्मापुरंदरः।
यमकालश्चित्रगुप्तश्चाधिदेवा इमे स्मृताः॥
ॐ अधिदेवताभ्यो नमः॥
ॐ अग्निरापोमहीविष्णुरिंद्ररिन्द्राणिका तथा।

Scanned with CamScanner

प्रजापतिर्भुजंगश्च ब्रह्माप्रत्यधिदेवता: ॥
ॐ प्रत्यधिदेवताभ्यो नम: ॥
ॐ विनायकस्तथादुर्गा वायुराकाशमेव च।
अश्विनो चैव पंचैतांल्लोकपानान्म्यहम् ॥
ॐ गणादिपंचलोकपालेभ्यो नम: ॥
ॐ इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतोवरुणो मरुत्।
कुबेर ईशो ब्रह्मा चानन्ताश्च दिगीश्वरा: ॥
ॐ इंद्रादि दशदिग्पालेभ्यो नम: ॥

देवों का आवाहन

देव शक्तियाँ आदिशक्ति की, परब्रह्म की विभिन्न धाराएँ हैं। शरीर एक है, उसमें रक्तपरिभ्रमण संस्थान, पाचन संस्थान, वायु-संचार संस्थान, विचार संस्थान, आदि अनेक संस्थान हैं। वे सब स्वतंत्र हैं और आपस में जुड़े हुए भी। इसी प्रकार सृष्टि-संतुलन की व्यवस्था के लिए इस विराट सत्ता की विभिन्न चेतना-धाराएँ विभिन्न उत्तरदायित्व सँभालती हैं। इन्हें ही देव शक्तियाँ कहा जाता है। ईश्वरेच्छा दिव्य योजना के अनुरूप हर कार्य में उनका सहयोग अपेक्षित भी है और वह प्राप्त भी होता है, इसलिए सत्कार्यों में देव शक्तियों के आवाहन-पूजन का विधि-विधान सम्मिलित रहता है। साधकों के पुरुषार्थ के साथ वह दिव्य सहयोग भी जुड़ सके, इसके लिए भाव-श्रद्धायुक्त देव-पूजन किया जाता है।

उपस्थित सभी जनों से निवेदन किया जाए कि वे पूजा में सम्मिलित रहें। पूजनकृत्य एक प्रतिनिधि भले करे, परंतु देवों की प्रसन्नता सबकी भावना के संयोग के बिना नहीं पाई जा सकती। '**भावो हि विद्यते देवाः तस्मात् भावो हि कारणम्**'। के अनुसार भाव-संयोग से ही पूजन में शक्ति आती है। सबका ध्यान आकर्षित करते हुए उन्हें भावसूत्र में बाँधकर पूजनक्रम चलाया जाए।

हर देवशक्ति का भाव-चित्रण करके मंत्र बोलें। मंत्र के साथ प्रतिनिधि पूजा करें। सभी लोग भावनापूर्वक आवाहन, ध्यान एवं नमस्कार करते रहें।

यहाँ प्रत्येक मंत्र के पूर्व उससे संबद्ध देवशक्ति का स्वरूप समझाया गया और अंत में आवाहन-स्थापना का निवेदन किया गया है। बड़े यज्ञों में इस क्रम को चलाने से वातावरण अधिक प्रखर और भावभरा बनता है। यदि संक्षिप्त आयोजन है तो उसमें संक्षिप्त हवनपद्धति के ढंग से केवल मंत्र बोलते हुए आगे बढ़ा जा सकता है। समय और परिस्थितियाँ देखते हुए विस्तार या संक्षिप्तीकरण का निर्णय विवेकपूर्वक लेना चाहिए।

गुरु—परमात्मा की दिव्य चेतना का वह अंश, जो साधकों का मार्गदर्शन और सहयोग करने के लिए व्यक्त होता है—

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुरेव महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १॥
अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ २॥
ॐ श्री गुरवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

गायत्री—वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता, सद्ज्ञान-सद्भाव की अधिष्ठात्री, सृष्टि की आदिकारण मातेश्वरी।

ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयंतां पावमानी द्विजानाम् । आयुः प्राणं प्रजां पशुं, कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥ ३ ॥ (अथर्व० १९/७१/१)
ॐ श्री गायत्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। ततो नमस्कारं करोमि।

गणेश—विवेक के प्रतीक, विघ्नों को दूर करने में कुशल, प्रथम पूज्य—

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं, पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ४॥
ॐ श्री गणेशाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

गौरी—श्रद्धा निर्विकारिता, पवित्रता की प्रतीक मातृशक्ति—
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके! ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥ ५॥
ॐ श्री गौर्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

हरि—हृदयस्थ सत् प्रेरणा के स्रोत खोलने वाले करुणा-निधान—

शुक्लांबरधरं देवं, शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ ६॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनो हरिः ॥ ७॥
ॐ श्री हरये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

सप्तदेव—सप्तलोक एवं सप्तद्वीपा वसुंधरा का संतुलन रखने वाली सात महाशक्तियों का युग्म—
विनायकं गुरुं भानुं, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणाम्यादौ शांतिकार्यार्थसिद्धये ॥ ८॥
ॐ सप्तदेवेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

पुंडरीकाक्ष—कमल जैसी निर्विकार, निर्दोष भावना एवं अंतर्दृष्टि देने वाले भक्तवत्सल—
मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरुड़ध्वजः।
मंगलं पुंडरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः ॥ ९॥
ॐ पुंडरीकाक्षाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

ब्रह्मा—सृष्टिकर्ता, निर्माण की क्षमता आदि के स्रोत—
त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा, सत्यलोकपितामहः।

Scanned with CamScanner

आगच्छ मंडले चास्मिन्, मम सर्वार्थसिद्धये॥ १०॥

ॐ श्री ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

विष्णु—पालन-पोषण करने वाले साधनों-विभूतियों को सार्थक बनाने वाले प्रभु—

शांताकारं भुजगशयनं, पद्मनाभं सुरेशम्,
विश्वाधारं गगनसदृशं, मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानगम्यम्,
वंदे विष्णुं भवभयहरं, सर्वलोकैकनाथम्॥ ११॥

ॐ श्री विष्णवे नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

शिव—परिवर्तन, अनुशासन के सूत्रधार, कल्याणकारी प्रवृत्तियों के दाता—

वंदे देवमुमापतिं सुरगुरुं, वंदे जगत्कारणम्,
वंदे पन्नगभूषणं मृगधरं, वंदे पशूनांपतिम्।
वंदे सूर्यशशांकवह्निनयनं, वंदे मुकुंदप्रियम्,
वंदे भक्त जनाश्रयं च वरदं; वंदे शिवं शंकरम्॥ १२॥

ॐ श्री शंकराय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

त्र्यंबक—भवबंधनों और मृत्यु से ऊपर उठाकर मुक्ति का अधिकारी बनाने वाली सत्ता—

ॐ त्र्यंबकं यजामहे, सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ १३॥

ॐ श्री त्र्यंबकाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

दुर्गा—संगठन, सहकार, सत्साहस एवं सामर्थ्य की अधिष्ठात्री मातृशक्ति—

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजंतोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दुःखभयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥ १४॥

ॐ श्री दुर्गायै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

सरस्वती—अज्ञान एवं नीरसता हटाने वाली ज्ञान और कला की अधिष्ठात्री माँ—

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वंदे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥ १५॥

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

लक्ष्मी—साधनों व धन-वैभव की अधिष्ठात्री माँ—

आर्द्रां यःकरिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ १६॥

ॐ श्री लक्ष्म्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

काली—अकल्याणकारी वृत्तियों का संहार करने में समर्थ प्रचंड चेतना—

कालिकां तु कलातीतां कल्याण हृदयां शिवाम्।
कल्याणजननीं नित्यं कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥ १७॥

ॐ श्री कालिकायैनमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

गंगा—अपवित्रता एवं पापवृत्तियों का हरण-शमन करने वाली दिव्य धारा—

विष्णुपादाब्जसंभूते गङ्गे त्रिपथगामिनि।
धर्मद्रवेति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि॥ १८॥

ॐ श्री गंगायै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

तीर्थ—मानवीय अंतःकरण में सत्प्रवृत्तियों, सदिच्छाओं का बीजारोपण एवं विकास करने में समर्थ दिव्य प्रवाह—

पुष्करादीनि तीर्थानि, गंगाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि, पूजाकाले सदा मम॥ १९॥

ॐ श्री तीर्थेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

नवग्रह—विश्व की जड़-चेतन प्रकृति को तालमेल व सूत्रबद्धता प्रदान करने वाले सामर्थ्यों के प्रतीक—

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरांतकारी, भानुः शशीभूमिसुतो बुधश्च
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवंतु॥ २०॥

ॐ श्री नवग्रहेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

षोडशमातृका—अंतरंग एवं अंतरिक्ष में विद्यमान १६ कल्याणकारी शक्तियों का युग्म—

गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ २१॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिःआत्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः॥ २२॥

ॐ श्री षोडशमातृकाभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि ध्यायामि।

सप्तमातृका—सात महाशक्तियाँ, जिनका नियोजन मंगल कार्यों में ही करने से वे माता की तरह संरक्षण देती हैं—

कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा सिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्याश्च सप्तैता दिव्यमातरः॥ २३॥

ॐ श्री सप्तमातृकाभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

वास्तुदेव—वस्तुओं में अदृश्य रूप से सन्निहित व सुसंस्कार-समर्थक चेतना शक्ति—

नागपृष्ठसमारूढं शूलहस्तं महाबलम्।
पातालनायकं देवं, वास्तुदेवं नमाम्यहम्॥ २४॥

ॐ श्री वास्तुदेवाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

क्षेत्रपाल—विभिन्न क्षेत्रों में देवत्व का संचार करने वाली सूक्ष्म व्यवस्था के अधिष्ठाता—

क्षेत्रपालान्नमस्यामि सर्वारिष्टनिवारकान्।

Scanned with CamScanner

अस्य यागस्य सिद्ध्यर्थं पूजयाराधितान् मया॥ २५॥

ॐ श्री क्षेत्रपालेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

सर्वदेव नमस्कार

देव पूजन के बाद सर्वदेव को नमस्कार करना चाहिए। नमस्कार का उद्देश्य देव शक्तियों का सम्मान, उनके प्रति अपनी श्रद्धा का प्रकटीकरण तो है ही, अपने मन एवं रुचि का झुकाव देवत्व की ओर करना भी है। हमारे मन में देवत्व के विपरीत अनर्थकारी आसुरी प्रवृत्तियों के प्रति झुकाव भी पैदा होता रहता है। उसे निरस्त करके पुनः कल्याणप्रद देवत्व के प्रति झुकाव-अभिरुचि पैदा करना भी एक पुरुषार्थ है। देव नमस्कार के समय ऐसे भाव रखे जाएँ।

नमस्कार में छह देव-दंपतियों का तथा विशेष सामाजिक कर्त्तव्यों का वहन करने वाले देवतत्त्वों का सम्मान, अभिनंदन-अभिवंदन करते हुए मानवता के प्रति नमन-वंदन की प्रक्रिया को पूरा किया गया है।

(१) बुद्धि और विवेक को गणेश और उनकी पत्नी को सिद्धि-बुद्धि।

(२) समृद्धि और वैभव को लक्ष्मीनारायण।

(३) व्यवस्था और नियंत्रण को उमा-महेश।

(४) वाणी और भावनाओं को वाणी हिरण्यगर्भ।

(५) कला और उल्लास को शची-पुरंदर।

(६) जन्म और पालनकर्त्री देव-प्रतिमाओं को माता-पिता कहा गया है। इन छह युग्मों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने, उनकी उपयोगिता समझने और आवश्यकता अनुभव करने के लिए नमन-वंदन किया जाए।

(७) कुलदेवता—अपने वंश में उत्पन्न हुए महामानव।

(८) जीवन-लक्ष्य को सरल बनाने वाले माध्यम—इष्ट देवता।

(९) शासन-संचालक—ग्रामदेवता।

(१०) स्थान देवता—पंच व समाज-सेवक।

(११) वास्तु देवता—शिल्पी, कलाकार, वैज्ञानिक।

(१२) किसी भी लोक-मंगल में निरत परमार्थपरायण-सर्वदेव।

(१३) आदर्श चरित्र, सद्ज्ञान, साधनारत ब्राह्मण।

(१४) प्रेरणा और प्रकाश देने वाले स्थान या व्यक्ति—तीर्थ।

(१५) मानवता की दिव्य चेतना—गायत्री। ये सब देव-तत्त्व हुए।

ॐ सिद्धि बुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।

ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।

ॐ शचीपुरंदराभ्यां नमः।

ॐ मातृपितृ चरणकमलेभ्यो नमः।

ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।

ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।

ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।

ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।

ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः।

ॐ एतत्कर्म प्रधान श्रीगायत्रीदेव्यै नमः।

ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

पंचवेदी-स्थापना

विशेष देवों में पाँच प्रधान माने गए हैं। इन्हीं से यह जगत बना है। शरीर से लेकर समस्त दृश्य जड़ जगत केवल परमाणुओं का बना पदार्थ ही नहीं है, वरन उनके अंतराल में दैवी चेतना काम करती है। जड़ में चेतन की भावना—यही अध्यात्मवाद है। चेतन को जड़ मानना—यही भौतिकवाद है। सृष्टि के आधारभूत पंचतत्त्वों को अध्यात्म ने चेतन देवसत्ता से ओत-प्रोत माना है, उनका स्थूल रूप तो कलेवर मात्र है। इस तत्त्व आत्मा को ही यज्ञानुष्ठानों में देवरूप में प्रतिष्ठापित और पूजित किया जाता है। पूजा का अर्थ है—कृतज्ञ भावना का जागरण। यह जाग्रति देवताओं के माध्यम से अपने अंतःकरण को ही उदात्त और महान बनाती है।

पंचतत्त्वों के रूप में पाँच देवता मुख्य हैं। सृष्टि का एवं प्राणियों का निर्माण, अभिवर्द्धन एवं अंत इन्हीं तत्त्वों में संपन्न होता है। इसलिए यज्ञ-कार्य में इन पंचतत्त्वों—आकाश, भूमि, अग्नि, वायु, वरुण देवताओं की पूजा, उनके सम्मानार्थ एवं स्मरण आदि के लिए विभिन्न दिशाओं में पाँच वेदियाँ स्थापित की जाती हैं।

पंच वेदियों में प्रधान वेदी सर्वतोभद्रमंडल पूर्व दिशा में स्थापित किया जाता है। पूर्व और दक्षिण के बीच अर्थात आग्नेय कोण में अग्नि देवता की वेदी, दक्षिण और पश्चिम के बीच अर्थात नैर्ऋत्य कोण में पृथ्वी देवता की वेदी, पश्चिम और उत्तर के बीच अर्थात वायव्य कोण में वायु देवता की वेदी, उत्तर तथा पूर्व अर्थात ईशान कोण में वरुण देवता की वेदी स्थापित की जानी चाहिए। अग्नि देवता की वेदी पर लाल रंग, आकाश के लिए सफेद, वायु के लिए पीला, धरती के लिए हरा एवं वरुण के लिए काला रंग उपयोग में लाया जाता है।

Scanned with CamScan

तत्व वेदी

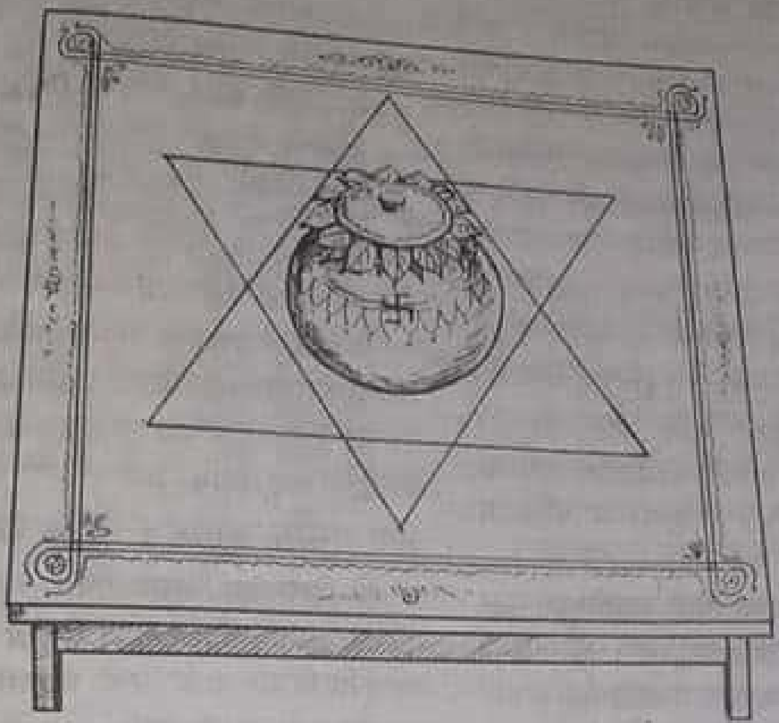

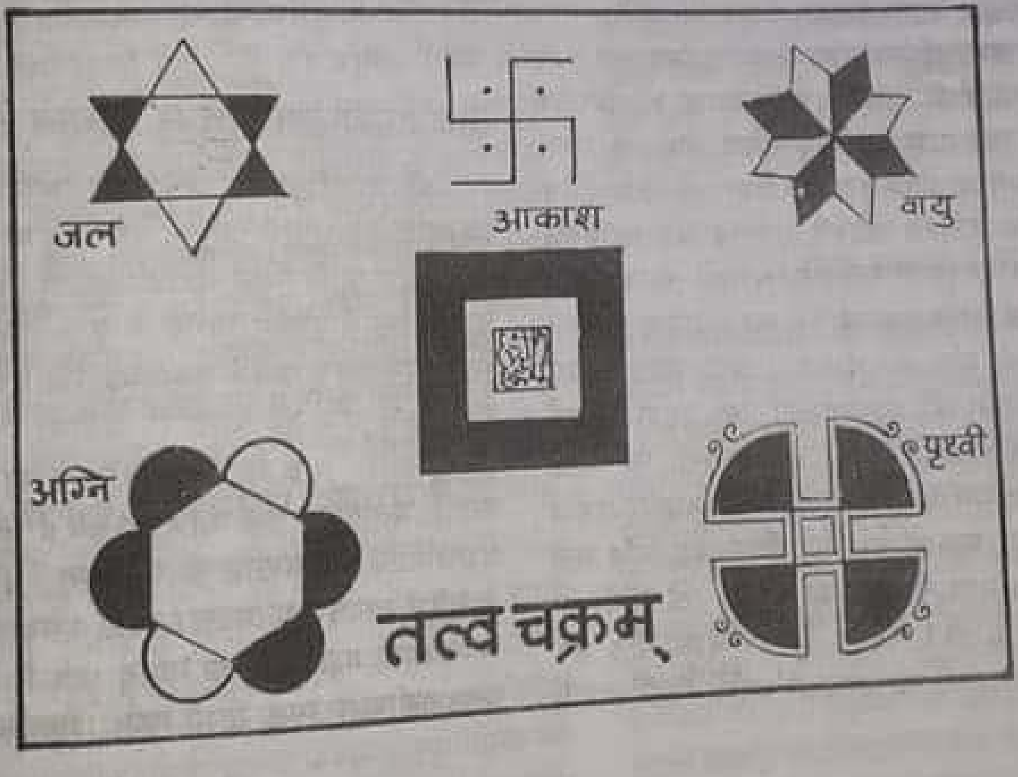

तत्व चक्रम्

Scanned with CamScanner

प्रत्येक वेदी पर तत्वों के रंग के अनुसार रँगे हुए चावलों से षट्कोण बनाकर उस पर कलश स्थापित करने चाहिए।

यह बड़े यज्ञों का क्रम है। छोटे सामान्य यज्ञों में इस स्थापना की आवश्यकता नहीं पड़ती। जहाँ स्थापना की जाए, वहाँ चार कोनों पर चार चौकियाँ रखकर उन पर पीले कपड़े बिछाए जाएँ। ऊपर रँगे हुए चावलों के मंगल चिह्नवद्ध कोष्ठ बना दिए जाएँ। मध्य में सुसज्जित कलश रखे जाएँ। ये चार तत्वों के चार कलश हुए। मध्य पीठ की प्रधान देवता चौकी को आकाश कलश माना जाए।

आकाश का कोई रंग नहीं अथवा सब रंगों का सम्मिश्रण है, इसलिए इसका प्रतीक सर्वतोभद्र चक्र सब रंगों से मिलाकर बनाया जाता है और ३३ कोटि देवताओं का आवाहन उसी में कर लिया जाता है।

हमारा शरीर अन्नमयकोश, प्राणमयकोश, मनोमयकोश, विज्ञानमयकोश एवं आनंदमयकोश इन्हीं के द्वारा विनिर्मित है। स्वेदज, अंडज, उद्भिज्ज, जरायुज चार प्रकार के प्राणी और पाँचवें जड़ पदार्थ यह पंचधा प्रकृति भी इन्हीं पाँच देवताओं की प्रतिक्रिया है। जड़-चेतन इस जगत के पंचधा विश्लेषण को पंचदेवों के रूप में माना गया है।

पाँच चौकियों पर स्थापित पाँच कलशों को एक-एक देवता का प्रतीक मानकर उनसे प्रत्येक का पूजन जल, पुष्प, अक्षत, चंदन, नैवेद्य—इन पाँच वस्तुओं से किया जाए।

प्रधान कलश की मुख्य वेदी आकाशतत्व की है। इस पर तैंतीस प्रधान देवता स्थापित होते हैं तथा 'अंतरिक्ष सूक्त' का पाठ होता है। अग्निकोण में अग्निदेवता की स्थापना के लिए अग्नि सूक्त, नैर्ऋत में जल देवता के लिए वरुण सूक्त, वायव्य में वायु सूक्त तथा ईशान में पृथ्वी का भू सूक्त पढ़ा जाता है। कलशों के नीचे तत्वों के यंत्र बनाए जाते हैं। इन तत्व-यंत्रों के चित्र आगे दिए गए हैं।

अथ अंतरिक्ष सूक्तम् (प्रधान वेदी)

ॐ अंतरिक्ष आसां स्थाम श्रांतसदामिव। आस्थानमस्य भूतस्य विदुष्टद् वेधसो न यत्॥ १॥ ॐ अंतरिक्षेण पतित विश्वा भूतावचाकशत्। शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेन ते हविषा विधेम॥ २॥ ॐ अंतरिक्षेण सह वाजिनीवत् कर्की वत्सामिह रक्ष वाजिन्। अयं घासो अयं व्रज अह वत्सां नि बध्नीमः। यथानाम व ईश्महे स्वाहा॥ ३॥ ॐ अंतरिक्षेण सह वाजिनीत कर्की वत्सामिह रक्ष वाजिन्। इमे ते स्तोका बहुला एह्यर्वाङियं ते कर्कीह ते मनोऽस्तु॥ ४॥ ॐ अंतरिक्षे वायवे समनमंत्स आर्ध्नोत्। यथांतरिक्षे वायवे समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु॥ ५॥ ॐ अंतरिक्षं जालमासीज्जालदण्डा दिशो महीः। तेनाभिधाय दस्यूनां शक्रः सेनामपावपत॥ ६॥ ॐ अंतरिक्षं दिवं भूमिमादित्यान् मरुतो दिशः। लोकांत्स सर्वानाप्नोति यो ददाति शतौदनम्॥ ७॥ ॐ अंतरिक्षं धेनुस्तस्या वायुर्वत्सः। सा मे वायुना वत्सेनेषमूर्जं काम दुहाम्। आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा॥ ८॥

अथ अग्नि सूक्तम् (अग्नि कोण)

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ १॥ ॐ अग्निरत्रिं भरद्वाजं गविष्ठिरं पावन्नः कण्वं त्रसदस्युमाहवे। अग्नि वसिष्ठो हवते पुरोहितो मृळीकाय पुरोहितः॥ २॥ ॐ अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानीर्नः सहुरेहूत एधि। हत्वाय शत्रून्वि भजस्व वेद आजो मिमानो वि मृधो नुदस्व॥ ३॥ ॐ अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्याग्निर्विश्वस्य हविषः कृतस्य। क्रतं ह्यस्य वसवो जुषंताथा देवा दधिरे हव्यवाहम्॥ ४॥ ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहित: तमीमहे महागयम्॥ ५॥ ॐ अग्निर्जाता देवानामग्निर्वेद मर्तानामपीच्यम्। अग्निः स द्रविणोदा अग्निर्द्वारा व्यूर्णुते स्वाहुतो नवीयसा नभन्तामन्यके समे॥ ६॥ ॐ अग्निर्दाद् द्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिय: सहस्रा सनोति। अग्निर्दिव हव्यमा ततानाऽग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा॥ ७॥ ॐ अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यासद्विश्वं न्यत् त्रिणम्। अग्निर्नो वनते रयिम्॥ ८॥

अथ वरुण सूक्तम् (नैर्ऋत कोण)

ॐ हिरण्यवर्णाः शुचयः पवित्राः पावको यासु जातः कश्यपो यास्विंद्रः॥ अग्निर्यां गर्भं दधिरे विरूपा स्तान आपः शंऽस्योना भवन्तु॥१॥ ॐ यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्॥ मधुश्च्युतः शुचयो याः पावको स्तान आपः शंऽस्योना भवन्ति॥ २॥ ॐ यासां देवा हि विकृण्वंति भक्ष्यं या अंतरिक्षे बहुधा भवन्तु॥ या पृथिवीं पयसोदन्ति शुक्रा स्तान आपः शंऽस्योना भवंतु॥ ३॥ ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातनः। महेरणाय चक्षसे, यो वः शिवतमो रसः॥ ४॥ तस्य भाजयते ह नः, उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरङ्गमामव, यस्य क्षयाय जिंवथ आपोजन यथा च नः॥५॥ ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मैसन्तु। योऽस्मांद्वेष्टि यञ्च वयंद्विष्मः॥ ६॥ ॐ हिरण्यशृंङ्गं वरुणं प्रपद्ये तीर्थं मे देहि याचितः॥ यं मया भुक्तमसाधूनां पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः॥ ७॥ ॐ यं मे मनसा वाचा कर्मणा वा दुष्कृतं कृतम्॥ तन्न इंद्रो वरुणो बृहस्पतिः सविता च पुनन्तु पुनःपुनः॥८॥

अथ वायु सूक्तम् (वायव्य कोण में)

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान् सोम पीतये॥ १॥ ॐ वायुरग्रगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम् शिवो नियुद्भिः शिवाभिः॥ २॥ ॐ वायो शुक्रोऽअयामि ते मध्वोऽअग्र दिविष्टिषु। आ याहि सोम पीतये स्पार्हो देव नियुत्वता॥ ३॥ ॐ वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्सोमोऽअतिद्रुतः। इंद्रस्य युज्यः सखा॥ ४॥ ॐ वायोः पूतः पवित्रेणप्राङ् सोमोऽअतिद्रुतः। इंद्रस्य युजः सखा॥ ५॥ ॐ वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेभ्राजिसा

Scanned with CamScanner

सूर्यस्य वर्चसा। विमुच्यन्तामुस्रिया॥ ६॥ ॐ वायवा याहि दर्शते मे सोमा अरंकृताः। तेषां पाहि श्रुधी हवम्॥ ७॥ ॐ वाय उक्थेभिर्जरंते त्वामच्छा जरितारः। सुतसोमा अहर्विदः॥ ८॥

अथ भू सूक्तम् (ईशान में)

ॐ भूमिर्भूम्ना द्यौरिणांतरिक्षान्त महित्वा। उपस्थे ते देव्यदितेऽग्निमंदमन्नाद्याया दधे॥ १॥ ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमी दसं मातरंपुरः। पितरंश्च प्रियंत्स्वः॥ २॥ ॐ त्रिंशद्धामविराजति वाक्पतंगाय शिश्रये प्रत्यस्य वहद्युभिः॥ ३॥ ॐ अस्य प्राणाद- पानंत्यंतश्चरति रोचना। व्यख्यंमहिषः सुम्वः॥ ४॥ ॐ यत्वा क्रुद्धः परोवप मंयुना यदवत्या। सुकल्पमग्ने तत्त्वं पुनस्त्वो द्दीपयामसि॥ ५॥ ॐ यत्ते मन्युः परोप्तस्य पृथिवीमनुदध्वसे। आदित्या विश्वे तद्देवा वसवश्चसमांभरन्॥ ६॥ ॐ मोदनी देवी वसुंधरा स्याद्वसुधा देवी वासवी। ब्रह्मवर्चसः पितृणां श्रोत्रं चक्षुर्मनः॥ ७॥ ॐ देवी हिरण्यगर्भिणी, देवीप्रसूवरी। रसने सत्यायने सीद॥ ८॥

संक्षेप में पाँचों के देवमंत्र नीचे दिए गए हैं। समय की कमी न हो तो पाँच पूजा-वस्तुएँ अलग-अलग समर्पित करते समय पुरुष सूक्त में से ये पाँच मंत्र भी बोले जा सकते हैं।

॥ पृथ्वी॥

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥ (यजु० ८/३२)

॥ वरुण॥

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुष ꣳ स मा न ऽ आयुः प्र मोषीः॥ (यजु० १८/४९)

॥ अग्नि॥

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्॥ (यजु० २१/३)

॥ वायु॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ꣳ सहस्रिणी- भिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिंत्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ (यजु० २७/२८)

॥ आकाश॥

ॐ या वां कशा मधुमत्य श्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा॥ (यजु० ७/११)

स्विष्टकृत भोग

आवाहित किए गए देवी-देवताओं के प्रीत्यर्थ एवं तत्सम्मानार्थ नैवेद्य भेंट करने के लिए स्विष्टकृत भोग का विधान है।

स्विष्टकृत नैवेद्य के लिए पाँच पत्तलों में मेवा, मिठाई, हलुआ, खीर, फल एवं एक-एक में पाँच-पाँच घृतदीप जलाकर निम्न मंत्रों के साथ एक-एक पत्तल विभिन्न वेदियों पर रखें।

इस मंत्र से जल देवता की वेदी पर भोग चढ़ाएँ—

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुषꣳस मा नऽआयुः प्र मोषीः। ॐ वरुणे नमः।

इस मंत्र से पृथ्वी देवता की वेदी पर भोग चढ़ाएँ—

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥ ॐ पृथिव्यै नमः॥

इस मंत्र से अग्नि देवता की वेदी पर भोग चढ़ाएँ—

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्॥ ॐ अग्नेय नमः॥

इस मंत्र से वायु देवता की वेदी पर भोग चढ़ाएँ—

ॐ आ नो नियुद्भिः शतनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिंत्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ वायवे नमः॥

इस मंत्र से आकाश देवता की वेदी पर भोग चढ़ाएँ—

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा॥ ॐ आकाशाय नमः॥

पाँचों वेदियों पर नैवेद्य (भोग) की पत्तलें रखे जाने के बाद लोगों से बुराइयाँ छोड़ने एवं अच्छाइयों के व्रत ग्रहण करने का संकल्प कराना चाहिए। इसके लिए पहले से ही जब भोग की पत्तलों का कार्य चल रहा हो तो लोगों में विशेष प्रकार से छपे पत्र बाँट देने चाहिए, जिसमें बुराइयों तथा अच्छाइयों के विवरण हों और प्रत्येक व्यक्ति उनमें से अपने लिए कुछ विचार सके। प्रत्येक व्यक्ति विचारपूर्वक कम से कम एक बुराई छोड़ने और एक अच्छाई ग्रहण करने का व्रत ले और उस पत्र में लिख दे। तत्पश्चात एक टोकरी या थाली में उन्हें इकट्ठा कर लिया जाए।

सर्वदेव-स्थापन के लिए

सर्वतोभद्र चक्र

सर्वतोभद्र चक्र लाल, हरे, काले और सफेद रंगों से बनाया जाता है। यह सभी प्रधान देवों की स्थापना का शास्त्रोक्त आसन है। वास्तव में अर्द्धलिंगतोभद्र, एकलिंगतोभद्र, चतुर्लिंगतोभद्र, द्वादश लिंगतोभद्र, नवग्रहभद्र, वरुणमंडलभद्र, वास्तु चक्र आदि अनेक भद्र होते हैं। इनका वर्णन भद्र मार्तंड में विस्तारपूर्वक दिया गया है। ये भद्र अनेक अवसरों पर अनेक प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होते हैं। इन सब में सर्वतोभद्र

Scanned with CamScanner

सर्वोपयोगी, सरल, प्रचलित एवं उपयुक्त है। सब देवताओं को एक स्थान पर प्रतिष्ठित करने के लिए यह रंग-बिरंगा गलीचा जहाँ शास्त्रोक्त एवं अनेक विशेषताओं से संयुक्त है, वहाँ देखने में भी बड़ा मनोहर एवं हृदयग्राही प्रतीत होता है।

चौकोर चौकी पर कोई उत्तम वस्त्र बिछाकर उस पर सर्वतोभद्र चक्र की स्थापना की जाती है। इसमें १८ कोष्ठक लंबाई में और १८ कोष्ठक चौड़ाई में होते हैं। बीचोबीच ४-४ कोष्ठकों की लंबाई-चौड़ाई में अष्टदल कमल बनाया जाता है। कमल के चारों ओर एक-एक कोष्ठ की पीतवर्ण परिधि होती है। इसका प्रमाण इस प्रकार है—

प्रागुदीच्यायता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिम्।
खंडेंदुस्त्रिपदैः कोणे शृंखला पंचभिः पदैः॥ १॥
एकादश पदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः।
चतुर्विंशत्पदा वापी परिधिर्विंशतिः पदैः॥ २॥
मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्ट दलं स्मृतम्।
श्वेतेंदुः शृंखला कृष्णा वल्ली नीलेन पूरयेत्॥ ३॥
भद्रारुणा सिता वापी परिधिः पीत वर्णिकः।
बाह्यांतर्दला श्वेता कर्णिका पीत वर्णिकः॥ ४॥
परिव्या वेष्टितमं पद्मं बाह्ये सत्त्वं रजस्तमः।
तन्मध्ये स्थापयिद् देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान्॥ ५॥
भद्रेण पूजनाशक्तौ कार्यमष्टदलं शुभम्।
गोधूमान्नेन तत्कार्यं तंडुलेनाऽथवा शुभम्॥ ६॥

उपर्युक्त प्रमाण को भाषा में समझाने से भावार्थ ठीक प्रकार वे ही समझ सकते हैं, जिन्होंने पहले सर्वतोभद्र को देखा या बनाया हो। सर्वसाधारण की सुविधा के लिए रंगीन चक्र ही अच्छा रहता है, जिसे देखकर पाठक उसे स्वयं ही बना सकें।

चावलों को प्रयुक्त रंगों से रँगकर उनकी स्थापना की जाती है। कई बार लाल रंग का कार्य मसूर की दाल से, काले रंग का कार्य उड़द की दाल से, हरे रंग का कार्य मूँग की दाल से, पीले रंग का कार्य चने की दाल से और सफेद रंग का कार्य चावलों से लिया जाता है। कपड़े पर उपर्युक्त रंगों की कढ़ाई-छपाई करके अथवा चाँदी-सोने की चद्दर पर इन रंगों की मीनाकारी करके भी भद्र बनाए जाते देखे गए हैं। कोई-कोई रोली, पिसी मेहँदी, हलदी, आटा और छनी हुई भस्म से क्रमशः, लाल, हरा, पीला, सफेद एवं काला रंग बनाते हैं। इस प्रकार कई प्रकार की वस्तुओं की सहायता से लोग भद्र बनाते हैं, पर अधिक उपयुक्त धान्यों द्वारा रंग-प्रदर्शन करना ही है।

भद्र बन जाने पर उसके ऊपर यथास्थान देवताओं की स्थापना तथा पूजा करें। उसकी विधि इस प्रकार है—

अक्षतान् गृहीत्वाऽऽवाहनं कुर्यात्।

हाथ में अक्षत लेकर देवताओं का क्रम से आवाहन-पूजन करें।

तत्र मध्ये कर्णिकायां ब्रह्माणमावाहयेत—

ॐ त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा सत्य लोक पितामहः।
आगच्छ मंडले चास्मिन् मम स्वार्थ सिद्धये॥

सर्वतोभद्र में देवताओं की स्थापना के स्थान—

(१) ब्रह्मा, (२) सोम, (३) ईशान, (४) इंद्रम्, (५) अग्नि, (६) यम, (७) निर्ऋति, (८) वरुण, (९) वायु, (१०) अष्टवसु, (११) एकादश रुद्र, (१२) द्वादश आदित्य, (१३) अश्विनौ, (१४) सपितृ विश्वदेवा, (१५) सप्त यक्ष, (१६) भूत नाग, (१७) गंधर्व अप्सरसः, (१८) स्कंद, (१९) शिव, (२०) शूल, (२१) महाकाल, (२२) दक्ष, (२३) दुर्गा, (२४) विष्णु, (२५) स्वधा, (२६) मृत्युरोग, (२७) गणपति, (२८) आप, (२९) मरुतः, (३०) पृथ्वी, (३१) गंगादि नदियाँ, (३२) सप्तसागर, (३३) मेरु, (३४) गदा, (३५) त्रिशूल, (३६) वज्र, (३७) शक्ति, (३८) दंड, (३९) खड्ग, (४०) पाश, (४१) अंकुश, (४२) गौतम, (४३) भरद्वाज, (४४) विश्वामित्र, (४५) कश्यप, (४६) जमदग्नि, (४७) वसिष्ठ, (४८) आत्रेय, (४९) अरुंधती, (५०) ऐंद्री, (५१) कौमारी, (५२) ब्राह्मी, (५३) वाराही, (५४) चामुंडा, (५५) वैष्णवी, (५६) माहेश्वरी, (५७) वैनायकी।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ॥१॥ इति मध्ये ब्रह्माणम्॥

सर्वप्रथम उपर्युक्त मंत्र से मंडप के मध्य में ब्रह्मा जी का आवाहन व पूजन करें॥ १॥

ततः उत्तरे वाप्यां सोममावाहयेत्—

ॐ क्षीरोदार्णव सम्भूतं लक्ष्मीबंधुं निशाकरम्।
मंडले स्थापयाम्यत्र सोमं सर्वार्थसिद्धये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः। सोममावाहयामि, स्थापयामि॥ भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ॥२॥ इति उत्तरे सोमम्॥

तदंतर '**ॐ क्षीरोदार्णव**' आदि मंत्रों से उत्तर में सोम (चंद्रमा) का आवाहन व पूजन करें।

ततः ईशान्यां खंडादावीशानमावाहयेत्—

ॐ ईशानापालकं श्रेष्ठं सर्वलोकभयङ्करम्।
मण्डले स्थापयामीह ईशानं सर्वसिद्धये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ॥ ३॥ इति ऐशान्यामीशानम्॥

तदंतर '**ॐ ईशानपालकं**' आदि मंत्रों से ईशान कोण में ईशान देवता का आवाहन व पूजन करें।

ततः पूर्वस्यां वाप्यामिंद्रमावाहयेत्—

Scanned with CamScanner

लघु सर्वतो भद्र

सर्वतोभद्र में देवताओं की स्थापना के स्थान

१- ब्रह्मा, २- सोम, ३- ईशान, ४- इन्द्र ५-अग्नि, ६- यम, ७- निऋति, ८- वरुण ९-वायु, १०-अष्टवसु, ११- एकादशरुद्र, १२-द्वादश आदित्य, १३-अश्विनौ, १४-सपितृ-विश्वेदेवा, १५-सप्त यक्ष, १६-भूत नाग, १७-गन्धर्व अप्सरस: १८-स्कन्द, १९-शिव, २०-शूल, २१-महाकाल, २२-दक्ष, २३-दुर्गा, २४- विष्णु, २५ - स्वधा, २६-मृत्युरोग, २७- गणपति, २८- अप, २९- मरुद:, ३०-पृथिवी ३१-गंगादि नदी, ३२-सप्तसागर, ३३-मेरु, ३४-गदा, ३५-त्रिशूल, ३६-वज्र, ३७-शक्ति, ३८-दण्ड, ३९-खड्ग, ४०-पाश, ४१- अंकुश, ४२- गौतम,४३- भरद्वाज, ४४-विश्वामित्र, ४५-कश्यप, ४६-जमदग्नि, ४७-वशिष्ठ, ४८- अत्रेय, ४९- अरुन्धती, ५०- ऐन्द्री, ५१- कौमारी, ५२- ब्राह्मी, ५३-वाराही, ५४-चामुण्डा, ५५- वैष्णवी, ५६-माहेश्वरी, ५७-वैनायकी,

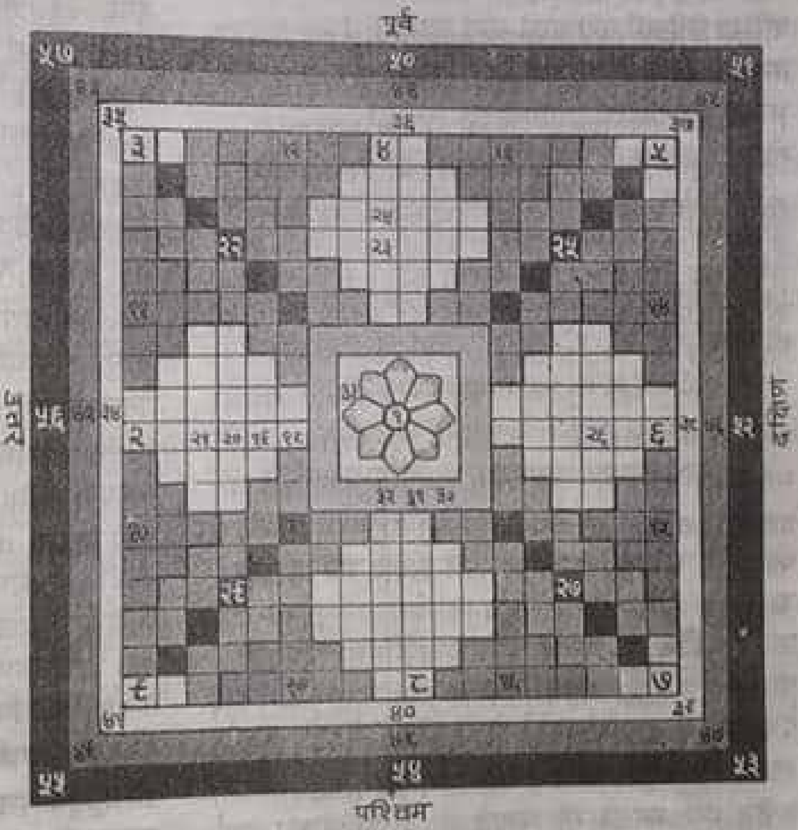

Scanned with CamScanner

ॐ सर्वलोकाधिकं श्रेष्ठं देवर्षीणां च पालकम्।
पूर्वदिक्पालकं देवराजं वै स्थापयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः इंद्राय नमः। इंद्रमावाहयामि, स्थापयामि॥
भो इंद्र इहागच्छ इह तिष्ठ॥ ४॥ इति पूर्वे इंद्रम्॥

तत्पश्चात 'ॐ सर्वलोकाधिक' मंत्र से पूर्व भाग में इंद्र देवता का आवाहन व पूजन करें।

ततः आग्नेय्यां खंडेंदावाग्निमावाहयेत्—
ॐ त्रिपादं मेषवाहं च त्रिशिखं च त्रिलोचनम्।
आग्नेय्यां स्थापयाम्यत्र ह्यग्निं पुरुषमुत्तमम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः। अग्निमावाहयामि, स्थापयामि॥
भो अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ॥ ५॥ इत्याग्नेय्यामग्निम्॥

फिर 'ॐ त्रिपादं मेषवाहं' मंत्र से अग्नि कोण में अग्नि देवता की स्थापना, आवाहन व पूजन करें।

ततो दक्षिणी वाप्यां यममावाहयेत्—
ॐ अन्तकः सर्वलोकानां धर्मराज इतिश्रुतः।
अतस्त्वां स्थापयाम्यत्र दक्षिणस्यां स्थिरोभव॥
ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि, स्थापयामि॥
भो यम इहागच्छ इह तिष्ठ॥ ६॥ इति दक्षिणे यमम्॥

फिर 'ॐ अंतकः सर्वलोकानां' मंत्र से दक्षिण भाग में यमराज की स्थापना व पूजन करें।

ततो नैर्ऋत्यां खंडेंदौ निर्ऋतिमावाहयेत्—
ॐ नैर्ऋत्यां वसतिर्यस्य घोररूपी सदा हि यः।
निर्ऋतिं स्थापयाम्यत्र नैर्ऋत्यां मंडले शुभे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो निर्ऋति इहागच्छ इह तिष्ठ॥ ७॥ इति नैर्ऋत्यां निर्ऋतिम्॥

तदंतर 'ॐ नैर्ऋत्या' मंत्र से नैर्ऋत्य कोण में निर्ऋति देवता की स्थापना करें।

ततः पश्चिमे वाप्यां वरुणामावाहयेत्—
ॐ अपाम्पतिं पाशधरं यादसाम्पतिमुत्तमम्।
वरुणं स्थापयाम्यत्र वारुण्यां मंडले शुभे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ॥ ८॥ इति पश्चिमे वरुणम्॥

फिर 'ॐ अपांपतिं पाशधरं' मंत्र से पश्चिम दिशा में वरुण की स्थापना व पूजन करें।

ततो वायव्यां खंडेंदौ वायुमावाहयेत्—
ॐ आशुगं स्पर्शबोधं च गंधवाहं सुशीतलम्।
मंडले स्थापयामीहि वायव्यां वायुमुत्तमम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो वायो इहागच्छ इह तिष्ठ॥ ९॥ इति वायव्यां वायुम्॥

फिर 'ॐ आशुगं स्पर्शबोधं' मंत्र से वायव्य कोण में वायु की स्थापना करें।

ततो वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे अष्टवसूनावाहयेत्—
ॐ धरो ध्रुवश्च सोमश्चाप्यांशुगाश्चानिलोऽनलः।
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वस्वष्टकमिह स्थिरम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसूनावाहयामि, स्थापयामि॥ भो अष्टवसवः इहागच्छत इह तिष्ठत॥ १०॥ इति वायुसोमयोर्मध्ये वसून्॥

फिर 'ॐ धरो ध्रुवश्च' मंत्र से वायु तथा सोम के बीच में धर, ध्रुव, सोम, आशुग, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास, इन आठों वसुओं की स्थापना, आवाहन व पूजन करें।

ततः सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे एकादश रुद्रानावाहयेत्—
ॐ त्रिनेत्राय त्रिरूपाय त्रिजटाय महात्मने।
नमस्कृत्वा स्थापयामि मण्डलोपरि मध्यतः॥
ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि, स्थापयामि॥ भो एकादश रुद्राः इहागच्छत इह तिष्ठत॥ ११॥ इति सोमेशयोर्मध्ये रुद्रान्॥

तत्पश्चात 'ॐ त्रिनेत्राय' मंत्र से सोम तथा ईशान के बीच में एकादश रुद्रों की स्थापना व पूजन करें।

ततः ईशानपूर्वयोर्मध्ये भद्रे द्वादशादित्यानवाहयेत्—
ॐ आदित्यं भास्करं चैव प्रभाकरदिवाकरौ।
सूर्यं ग्रहपतिं चैव ब्रध्नं तेजोहरिद्धरिम्॥
सप्ताश्वं वेदमूर्तिं च त्रिदेवत्वं क्रमेण च।
इत्यादि द्वादशादित्यान्मण्डले स्थापयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि, स्थापयामि॥ भो द्वादशादित्या इहागच्छत इह तिष्ठत॥ इति ईशानेंद्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्॥१२॥

तत्पश्चात 'ॐ आदित्यं' मंत्र से ईशान और इंद्र के बीच में द्वादश सूर्यों की स्थापना व पूजन करें।

ततः इंद्राग्न्योर्मध्ये भद्रेऽश्विनावावाहयेत्—
ॐ अश्विनौ देववैद्यौ च सर्गस्थित्यंतकारकौ।
मंडले स्थापयित्वा तु पूजयामीष्ट सिद्धये॥
ॐभूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनावा वाहयामि, स्थापयामि॥ भो अश्विनौ इहागच्छतम् इहतिष्ठतम्॥ इति इंद्राग्न्योर्मध्ये अश्विनौ॥ १३॥

तत्पश्चात 'ॐ अश्विनौ' मंत्र से इंद्र तथा अग्नि के बीच में अश्विनी कुमारों की स्थापना करें।

ततः अग्नियमयोर्मध्ये भद्रे सपितृन विश्वेदेवानावाहयेत्—
ॐ दैवे कर्मणि पित्र्ये च ये मुख्यास्सर्वदा शुभाः।
मंडले स्थापयामीह सुखानुष्ठानसिद्धये॥

Scanned with CamScan

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। विश्वेदेवानावाहयामि, स्थापयामि॥ भो विश्वेदेवा इहागच्छत इह तिष्ठत॥

ॐ अहमावाहयिष्यामि पितस्तांस्तेजसोऽधिकान्।
आयांतु पितरः सर्वे यज्ञांते शुद्धिदायकाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पितृभ्यो नमः। पितृनावाहयामि, स्थापयामि॥ भो पितर इहागच्छत इह तिष्ठत॥१४॥ इति अग्नियमयोर्मध्ये सपत्नीकान् विश्वेदेवान्॥

तत्पश्चात 'ॐ दैवे कर्मणि' मंत्र से अग्नि और यम के बीच में विश्वेदेव की स्थापना करें तथा 'ॐ अहमावाहयिष्यामि' आदि मंत्र से पितरों की स्थापना करें।

ततो यमनिर्ऋतयोर्मध्ये भद्रे सप्तयक्षानावाहयेत्—

ॐ यदृच्छया पर्यटंति यक्षराजा महीतले।
कौतुकं प्रेक्षितुं चास्मिन्मंडले संतु सुस्थिराः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान्। आवाहयामि, स्थापयामि॥ भो सप्तयक्षा इहागच्छत इह तिष्ठत॥ इति यम निर्ऋत्योर्मध्ये यक्षान्॥१५॥

तदंतर 'ॐ यदृच्छया पर्यटंति' मंत्र से यम और निर्ऋति के बीच में यक्षों की स्थापना करें।

ततो निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये भद्रे भूतनागानावाहयेत्—

ॐ अनंतो वासुकिश्चैव कालीयो मणिभद्रकः॥
शंखश्च शंखपालाश्च कर्कोटकधनंजयौ।
धतृराष्ट्रश्च नागेशाः प्रगृह्णंतु समार्चनम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भूतनागेभ्यो नमः। भूतनागान् आवाहयामि, स्थापयामि॥ भो भूतनागाः इहागच्छत इह तिष्ठत॥ इति निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये नागान्॥१६॥

तदंतर 'ॐ अनंतो वासुकिश्चैव' मंत्र से निर्ऋति और वरुण के बीच नाग देवताओं की स्थापना करें।

ततो वरुण वाय्वोर्मध्ये भद्रे गंधर्वाप्सरस आवाहयेत्—

ॐ उर्वशीप्रमुखाः सर्वाः स्वर्वेश्याः शक्रपूजिताः।
गंधर्वैश्च सहायान्तु मंडलेऽस्मिन्सुशोभनाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गंधर्वेभ्यो नमः। गंधर्वानावाहयामि, स्थापयामि॥ भो गंधर्वा इहागच्छत इह तिष्ठत॥ तत्रैव अप्सरस आवाहयेत्॥

ॐ आवाहयेऽहं सुरदेवसेव्याः स्वरूपतेजो मुखपद्मभासः।
सर्वामरेशैः परिपूर्णकामाः पूजां गृहीतुं मम यज्ञभूम्यै॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अप्सरोभ्यो नमः। अप्सरसः आवाहयामि, स्थापयामि। भो अप्सरस इहागच्छत इह तिष्ठत॥ इति वरुण वाय्वोर्मध्ये गंधर्वाप्सरसः॥१७॥

तत्पश्चात 'ॐ उर्वशी' आदि मंत्रों से वरुण और वायु के बीच में गंधर्व तथा अप्सराओं की स्थापना करें।

ततो ब्रह्मसोमयोर्मध्ये वायव्यां स्कंदनंदीश्वरं शूलं चावाहयेत्—

ॐ षडाननं चतुर्हस्तं स्कंदं गौरीसुतं शुभम्।
इहैव पूजयिष्यामि सर्वकामार्थ सिद्धये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कंदाय नमः। स्कंदमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो स्कंद इहागच्छ इह तिष्ठ॥१८॥

तदंतर 'ॐ षडाननं' आदि मंत्र से ब्रह्म और सोम के बीच में स्कंद की स्थापना करें।

ॐ त्र्यम्बकं त्रिपुरुषं नीलकंठं सदाशिवम्।
मंडले स्थापयामीह सुखानुष्ठान सिद्धये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः नंदीश्वराय नमः। नंदीश्वरमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो नंदीश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ॥१९॥

तदनंतर उपर्युक्त मंत्र से ब्रह्म और सोम के मध्य में नंदीश्वर (महादेव) की स्थापना करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः नंदिने नमः। नंदिनमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो नंदिन् इहागच्छ इह तिष्ठ। इति स्कंदादुत्तरे नंदिनम्॥

नंदीश्वर (महादेव जी) के साथ-साथ स्कंद के उत्तर में नंदिन् (नंदी, शिवजी का वाहन) की स्थापना करें।

नंदिकेश्वरादुत्तरः शूलं तदुत्तरतस्त्रैव महाकालंचावाहयेत्।
ॐआयातमायातमुमाप्रियस्य,प्रियौ मुनींद्रादिकसिद्धसेव्यौ॥
गृह्णीतमेतां मम शूलकालौ, पूजां सुखौघं कुरुतं नमो ताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शूलमहाकालाभ्यां नमः। शूल महाकालौ आवाहयामि, स्थापयामि॥ भो शूल महाकालौ इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् इति॥ २०॥

तत्पश्चात 'ॐ आयातमायातमुमाप्रियस्य' आदि मंत्र से नंदिकेश्वर के उत्तर में शूल तथा शूल के उत्तर में वहीं महाकाल की स्थापना करें।

ततो ब्रह्मेशानयोर्मध्ये वल्लीषु दक्षादीन् सप्त प्रजापतीनावाहयेत्—

ॐ दक्षोऽसि सर्वकार्येषु महायज्ञकर प्रिय।
ऋषिश्च सर्वदा दक्ष मंडलेस्मिन् स्थिरो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादि सप्तप्रजापतिभ्यो नमः। दक्षादिसप्तप्रजापतीनावाहयामि, स्थापयामि॥ भो दक्षादि सप्तप्रजापतयः इहागच्छत इह तिष्ठत॥२१॥ इति ब्रह्मेशानयोर्मध्ये दक्षम्॥

तदंतर 'ॐ दक्षोऽसि सर्वकार्येषु' मंत्र से ब्रह्म और ईशान के मध्य में दक्ष आदि सप्त प्रजापतियों की स्थापना करें।

ततो ब्रह्मेंद्रयोर्मध्ये वायव्यां दुर्गामावाहयेत्—

Scanned with CamScanner

ॐ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलंतीं सर्वदा शुभाम्।
भक्तानां वरदां नित्यां दुर्गामावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि॥ भो दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये दुर्गाम्॥ २२॥

तत्पश्चात 'ॐ तामग्निवर्णां' मंत्र से ब्रह्म और इंद्र के मध्य में दुर्गा देवी की स्थापना व पूजन करें।

ततो दुर्गापूर्वे विष्णुमावाहयेत्—
एह्येहि नीलांबुज मेचक त्वं श्रीवत्सवक्ष कमलाधिनाथ॥
सर्वामरैः पूजितपादपद्म ग्रहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥
ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः। विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति दुर्गापूर्वे विष्णुम्॥ २३॥

तदनंतर 'ॐ एह्येहि नीलाम्बुज' मंत्र से दुर्गा के पूर्व में विष्णु भगवान की स्थापना व पूजन करें।

ततो ब्रह्माग्न्योर्मध्ये वल्लीषु स्वधासित पितृना वाहयेयत्—
ॐ सुखायपितृन् कुलवृद्धिकर्तॄन्,
रक्तोत्पलाभानिहरक्त नेत्रान्।
सुरक्तमाल्याम्वरभूषितांश्च,
नमामि पीठे कुलवृद्धिहेतोः॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधासहितपितृयो नमः। स्वधासहित पितृनावाहयामि, स्थापयामि॥ भो स्वधासहितपितरः इहागच्छत इह तिष्ठत इति ब्रह्माग्न्योर्मध्ये स्वधाम्॥२४॥

तत्पश्चात 'ॐ सुखाय' मंत्र से ब्रह्म और अग्नि के मध्य में पितरों के सहित स्वधा की स्थापना करें।

ततो ब्रह्मयमयोर्मध्ये वायव्यां मृत्युरोगानावाहयेत्—
ॐ मृत्युरोगानन्तकस्य प्रेष्यप्राणाहरान् गणान्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजार्थं लोकनाशकान्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि॥ भो मृत्युरोगौ इहागच्छतम्। इह तिष्ठतम्॥ इति ब्रह्मयमयोर्मध्ये मृत्युरोगान्॥२५॥

तदनंतर 'ॐ मृत्युरोगानंतकस्य' मंत्र से ब्रह्म और यम के मध्य में मृत्यु तथा रोगों की स्थापना करें।

ततो ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये वल्लीषु गणपतिमावाहयेत्—
ॐ कुंकुमाभं सदानंदं भक्तसंकटनाशनम्।
चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं च मंडले स्थापयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि। भो गणपते इहागच्छत इह तिष्ठ॥ इति ब्रह्म निर्ऋत्योर्मध्ये गणेशम्॥ २६॥

तदंतर 'ॐ कुंकुमाभं' मंत्र से ब्रह्म और निर्ऋति के मध्य में गणपति की स्थापना करें।'

ततो ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये वायव्याम् आवाहयेत्—
ॐ पावनाः सर्वलोकानां निमग्नाः शुद्धिकारकाः।
सर्वपापहराः श्रेष्ठा मंडले स्थापयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः। अप आवाहयामि, स्थापयामि॥ भो अप इहागच्छत इह तिष्ठत॥ इति ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये अपः॥२७॥

तदनंतर 'ॐ पावनाः' मंत्र से ब्रह्म और वरुण के मध्य में अप (जल) की स्थापना करें।

ततो ब्रह्मवाय्वोर्मध्ये मरुत आवाहयेत्—
ॐ सुगंधिनश्च शैलाद्या मंदमंदवहाः सदा।
तानहं स्थापयामीह मरुतो मंडले शुभे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मरुदभ्यो नमः। मरुत आवाहयामि, स्थापयामि॥ भो मरुत इहागच्छत इह तिष्ठत॥ इति ब्रह्मवाय्वोर्मध्ये मरुतः॥२८॥

तत्पश्चात 'ॐ सुगंधितेनश्च' मंत्र से ब्रह्मा और वायु के बीच में मरुत की स्थापना करें।

ततो ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः प्रथिवीमावाहयेत्—
ॐ पृथिव्या धार्यते विश्वं दुर्ग्राहं सागरैर्नगैः।
अतस्त्वां स्थापयामीह ब्रह्मणो मंडले पदे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः। पृथिवीमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो पृथिवि इहागच्छ। इह तिष्ठ॥ इति ब्रह्मणः पादमूले पृथिवीम्॥२९॥

तदनंतर 'ॐ पृथिव्या' मंत्र से ब्रह्मा के चरणों पर पृथ्वी की स्थापना करें।

ततस्तत्रैव तदुत्तरतो गंगादिसप्तसरित आवाहयेत्—
ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिंधुकावेर्यौ मंडले स्थापयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुव स्वः गंगादिनदीभ्यो नमः। गंगादिनदीरावाहयामि, स्थापयामि॥ भो गंगादिनद्यः इहागच्छत इह तिष्ठत। इति ब्रह्मणः पादमूले नदीः॥ ३०॥

तत्पश्चात 'ॐ गंगे च यमुने' मंत्र से ब्रह्मा के चरणों पर ही गंगा आदि सात नदियों की स्थापना करें।

ततस्तत्रैव तदुत्तरत सप्तसागरानावाहयेत्—
ॐ समुद्राः सर्वतोयेषु श्रेष्ठा वै हरिवल्लभाः।
मंडले स्थापयामीह तान्नदीशान् सुखाप्तये॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् आवाहयामि, स्थापयामि॥ भो सप्तसागरा इहागच्छत इह तिष्ठत॥ इति ब्रह्मणः पादमूले गंगाद्युत्तरे सप्तसागरान्॥३१॥

तदनंतर 'ॐ समुद्रम्' मंत्र से ब्रह्मा के चरणों पर गंगा के उत्तर में सप्त सागरों (क्षारसागर, क्षीरसागर, दधिसागर, घृतसागर, इक्षुसागर, सुरासागर तथा स्वादूदक सागर) की स्थापना करें।

ततः कर्णिकोपरि मेरुमावाहयेत्—
ॐ एह्येहि कार्त्तस्वररूप सर्व भूभृत्परे चंद्ररवीदधान।
सर्वौषधिस्थान महेन्द्रमित्र लोकत्रयावास नमोऽस्तु तुभ्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः। मेरुमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो मेरो! इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति कर्णिकोपरिमेरुम्॥ ३२॥

तदनंतर 'ॐ ऐह्येहि कार्त्तस्वररूप' मंत्र से कर्णिका (मंडल) के ऊपर (मध्य) मेरु की स्थापना करें—

मंडलबाह्ये श्वेतपरिधौ उत्तरादिक्रमेण गदाद्यष्टायुध देवता स्थापनम्

यथा सोमसमीपे उत्तरे गदामावाहयेत्—

ॐ निषिक्ता कुमुदात्तस्य नाम्रा कौमोदकी गदा।
शांतिदा स्मरणादेव तस्यै तुभ्यं नमो नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः। गदामावाहयामि, स्थापयामि॥ भो गदे इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति सोम समीपे उत्तरे गदाम्॥ ३३॥

फिर 'ॐ निषिक्ता' मंत्र से सोम के समीप उत्तर में गदा की स्थापना करें।

तत ऐशान्यां त्रिशूलम् आवाहयेत्—

ॐ महायोगींद्र हस्तस्य शंकरस्य प्रियंकर।
त्रिशूल त्वमिहागच्छ पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः। त्रिशूलमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो त्रिशूल इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति ऐशान्यामीशान समीपे त्रिशूलम्॥ ३४॥

तत्पश्चात 'ॐ महायोगींद्र हस्तस्य' मंत्र से ईशान में, ईशान के समीप त्रिशूल की स्थापना करें।

ततः पूर्वे इंद्रसमीपे वज्रमावाहयेत्—

ॐ तप्तकाञ्चन वर्णाभं वज्रं वै शस्त्रनायकम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् गृहाणेमां नमोऽस्तुते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः। वज्रमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो वज्र इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति पूर्वे इंद्र समीपे वज्रम्॥ ३५॥

तत्पश्चात 'ॐ तप्तकांचनवर्णाभं' मंत्र से पूर्व में इंद्र के समीप वज्र की स्थापना करें।

तत आग्नेय्यामग्नि समीपे शक्तिमावाहयेत्—

ॐ सर्व दैत्यविनाशाय सर्वकामफलप्रदे।
सर्वसत्वहिते शक्ते शांतिं यच्छ नमोऽस्तुते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शक्त्ये नमः। शक्तिमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो शक्ते इहागच्छ, इह तिष्ठ॥ इति आग्नेय्याम् अग्नि समीपे शक्तिम्॥ ३६॥

तदनंतर 'ॐ सर्वदैत्य विनाशाय' मंत्र से अग्नि कोण में अग्नि के समीप शक्ति की स्थापना करें।

ततो दक्षिणस्यां यमसमीपे दंडमावाहयेत्—

ॐ धर्मराजस्य हस्तस्य यमस्य च सदा प्रिय।
दंडायुध नमस्तेऽस्तु सर्वसिद्धिप्रदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दंडाय नमः। दंडमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो दंड इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति दक्षिणस्यां यम समीपे दंडम्॥ ३७॥

तदनंतर 'ॐ धर्मराजस्य' मंत्र से दक्षिण दिशा में यम के समीप दंड की स्थापना करें।

ततो नैर्ऋत्यां निर्ऋति समीपे खंगमावाहयेत्—

ॐ नीलजीमूतवर्ण त्वं तीक्ष्णदंष्ट्र कृशोदर।
खंगराज नमस्तुभ्यं पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः खंगाय नमः। खंगमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो खंग इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति नैर्ऋत्यां निर्ऋति समीपे खंगम्॥३८॥

तत्पश्चात 'ॐ नीलजीमूतवर्ण' मंत्र से नैर्ऋत्य कोण में निर्ऋति के समीप खंग की स्थापना करें।

ततः पश्चिमे वरुणसमीपे पाशमावाहयेत्—

ॐ देवासि वरुणास्त्र! त्वं दैत्यवंशविदारण।
पाश मां समरे रक्ष रज्जुराज नमोऽस्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः। पाशमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो पाश इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति पश्चिमे वरुण समीपे पाशम्॥३९॥

तदनंतर 'ॐ देवासि वरुणास्त्रं' मंत्र से पश्चिम में वरुण के समीप पाश की स्थापना करें।

ततो वायव्यां वायुसमीपे अंकुशमावाहयेत्—

ॐ गजघ्नं परिवीरघ्नं परसैन्यापहारकम्।
गणेशस्य प्रियं तस्मादंकुशाय नमो नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अंकुशाय नमः। अंकुशमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो अंकुश इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति वायव्यां वायु समीपे अंकुशम्॥४०॥

तदनंतर 'ॐ गजघ्नं' मंत्र से वायव्य कोण में वायु के समीप अंकुश की स्थापना करें।

मंडलबाह्ये रक्तपरिधौ उत्तरादिक्रमेण गौतमाद्यष्ट देवता स्थापनम्

तत उत्तरे गौतममावाहयेत्—

ॐ गौतमः सर्वभूतानामृषीणां च सदा प्रियः।
श्रोतानां कर्मणां चैव संप्रदायप्रवर्तकः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः। गौतममावाहयामि, स्थापयामि॥ भो गौतम इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति उत्तरे गौतमम्॥ ४१॥

तदनंतर 'ॐ गौतमः' मंत्र से उत्तर में गौतम ऋषि की स्थापना करें।

तत ऐशान्या भरद्वाजमावाहयेत्—

ॐ भरद्वाज नमस्तेऽस्तु सदाध्ययनतत्पर।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥

Scanned with CamScanner

ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः। भरद्वाजमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो भरद्वाज इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति ऐशान्याम् भरद्वाजम्॥ ४२॥

तत्पश्चात 'ॐ भरद्वाज' मंत्र से ईशान कोण में भरद्वाज ऋषि की स्थापना करें।

ततः पूर्वे विश्वामित्रमावाहयेत्—

ॐ विश्वामित्र नमस्तुभ्यं ज्वलदग्निसमप्रभ।
अध्यक्षीकृतगायत्री तपोरूपेण संस्थितः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो विश्वामित्र इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति पूर्वे विश्वामित्रम्॥ ४३॥

तदनंतर 'ॐ विश्वामित्र' मंत्र से पूर्व दिशा में विश्वामित्र की स्थापना करें।

तत आग्नेय्यां कश्यपमावाहयेत्—

ॐ कश्यपः सर्वलोकाढ्यः सर्वभूतदयाकरः।
असि त्वां प्रार्थयामीश पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः। कश्यपानावाहयामि, स्थापयामि॥ भो कश्यप इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति आग्नेय्याम् कश्यपम्॥ ४४॥

तत्पश्चात 'ॐ कश्यपः' मंत्र से अग्निकोण में कश्यप की स्थापना करें।

ततो दक्षिणे जमदग्निमावाहयेत्—

ॐ जमदग्निर्महातेजास्तपसा ज्वलंतीह तम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः। जमदग्निमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो जमदग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति दक्षिणे जमदग्निम्॥४५॥

तदनंतर 'ॐ जमदग्निर्महातेजास्तपसा' मंत्र से दक्षिण में जमदग्नि की स्थापना करें।

ततो नैर्ऋत्यां वसिष्ठमावाहयेत्—

ॐ नमस्तुभ्यं वसिष्ठाय कर्मकर्त्रे महामुने।
धर्मरूपाय महते लोकानां हितकारिणे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः। वसिष्ठामावाहयामि, स्थापयामि॥ भो वसिष्ठ इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति नैर्ऋत्यां वसिष्ठम्॥ ४६॥

तत्पश्चात 'ॐ नमस्तुभ्यं' मंत्र से नैर्ऋत्य कोण में वसिष्ठ की स्थापना करें।

ततः पश्चिमे अत्रिमावाहयेत्—

ॐ अत्रये तु नमस्तुभ्यं सर्वलोकहितैषिणे।
तपोरूपाय सत्याय ब्रह्मणेऽमिततेजसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः। अत्रिमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो अत्रे इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति पश्चिमे अत्रिम्॥ ४७॥

तत्पश्चात 'ॐ अत्रये' मंत्र से पश्चिम में अत्रि की स्थापना करें।

ततो वायव्यामरुन्धतीमावाहयेत्—

ॐ अरुन्धत्यै नमस्तुभ्यं सर्वसौख्यप्रदायिनि।
इह मंडलमध्ये त्वं नमः पूजां गृहाण मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः। अरुन्धतीमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो अरुन्धति इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति वायव्याम् अरुन्धतीम्॥ ४८॥

तदनंतर 'ॐ अरुन्धत्यै' मंत्र से वायव्य कोण में अरुंधती की स्थापना करें।

मंडलबाह्ये कृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण ऐन्द्री आदि इष्ट देवता स्थापनम्

तत्र पूर्वे ऐंद्रीमावाहयेत्—

ॐ इंद्राणीं गजकुंभस्थां सहस्रनयनोज्ज्वलाम्।
नमामि वरदां देवीं सर्वदेवैर्नमस्तकृताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्रियै नमः। ऐन्द्रीमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो ऐन्द्रि इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति पूर्वे ऐन्द्रिम्॥ ४९॥

तदनंतर 'ॐ इंद्राणी' मंत्र से पूर्व में ऐंद्री की स्थापना करें।

तत आग्नेय्यां कौमारीमावाहयेत्—

ॐ एह्येहि कौमारि विधेहि शांतिं शक्तिं दधानेऽपि सदा हि मय्ये। स्कंधाधिरूढे शिखिपुंगवाभ्यां मातः प्रसाद प्रसृतिं प्रयच्छ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्यै नमः। कौमारीमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो कौमारि इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति आग्नेय्यां कौमारीम्॥ ५०॥

तत्पश्चात 'ॐ एह्येहि कौमारि' मंत्र से अग्नि कोण में कौमारी की स्थापना करें।

ततो दक्षिणस्यां ब्राह्मीमावाहयेत्—

ॐ चतुर्मुखीं जगद्धात्रीं हंसारूढां वरप्रदाम्।
सृष्टिरूपां महाभागां ब्रह्माणीं तां नमाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्मयै नमः। ब्राह्मीमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो ब्राह्मि! इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति दक्षिणे ब्राह्मीम्॥ ५१॥

तत्पश्चात 'ॐ चतुर्मुखीं' मंत्र से दक्षिण में ब्राह्मी की स्थापना करें।

ततो नैर्ऋत्यां वाराहीमावाहयेत्—

ॐ वाराहरूपिणीं देवीं दंष्ट्रोद्धृतवसुंधराम्।
शुभदां पीतवसनां वाराहीं तां नमाम्यहम्॥

Scanned with CamScanner

ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः। वाराहीमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो वाराहि! इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति नैर्ऋत्यां वाराहीम्॥ ५२॥

तदनंतर 'ॐ वाराहरूपिणीं' मंत्र से नैर्ऋत्य कोण में वाराही की स्थापना करें।

ततः पश्चिमे चामुंडामावाहयेत्—

ॐ चामुंडा मुंडमथनां मुंडमालोपशोभिताम्।
अट्टाट्टहाससमुदितां नमाम्यात्मविभूतये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चामुंडायै नमः। चामुंडामावाहयामि, स्थापयामि॥ भो चामुंडे इहागच्छ इह तिष्ठ। इति पश्चिमे चामुंडाम्॥ ५३॥

तत्पश्चात 'ॐ चामुंडा' मंत्र से पश्चिम में चामुंडा की स्थापना करें।

ततो वायव्यां वैष्णवीमावाहयेत्—

ॐ शंखचक्रगदापद्मधारिणीं कृष्णरूपिणीम्।
स्थितिरूपां खगेंद्रस्थां वैष्णवीं तां नमाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो वैष्णवि इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति वायव्यां वैष्णवीम्॥ ५४॥

तदनंतर 'ॐ शंखचक्रगदापद्मधारिणीं' मंत्र से वायव्य कोण में वैष्णवी की स्थापना करें।

तत उत्तरस्यां माहेश्वरीमावाहयेत्—

ॐ वृषारूढां शुभां शुभ्रां त्रिनेत्रां वरदां शिवाम्।
माहेश्वरीं मनाम्यहम् सृष्टिसंहारकारिणीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो माहेश्वरी इहागच्छ इह तिष्ठ॥ इति उत्तरे माहेश्वरीम्॥ ५५॥

तत्पश्चात 'ॐ वृषारूढां' मंत्र से उत्तर में माहेश्वरी की स्थापना करें।

तत ऐशान्यां वैनायकीमावाहयेत्—

ॐ चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च सर्वाभरणभूषिताम्।
आवाहयामि देवीशीं पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः। वैनायकीमावाहयामि, स्थापयामि॥ भो वैनायकी इहागच्छ इह तिष्ठ। इति ऐशान्यां वैनायकीम्॥ ५६॥

तदनंतर 'ॐ चतुर्भुजां' मंत्र से ईशान कोण में वैनायकी की स्थापना करें।

ततो हस्ते जलं गृहीत्वा। अनेन यथा मिलितोपचारैः कृतेन पूजनेन ब्रह्मादि सर्वतोभद्रं मंडलस्थ देवताः प्रीयंतां न मम॥

तब हाथ में जल लेकर सर्वतोभद्र मंडल के सभी देवताओं की पाद्यादि षोडशोपचार से पूजा करके सभी को नमस्कार करें तथा 'ब्रह्मादि सर्वतो भद्रमंडलस्थ देवताः प्रीयंतां न मम' उच्चारण करें।

समय कम हो या आयोजन छोटे हों तो लघु सर्वतोभद्र मंडल से भी काम चल सकता है।

स्वस्तिवाचन

स्वस्ति कल्याणकारी, हितकारी के तथा वाचन—घोषणा के अर्थों में प्रयुक्त होता है। वाणी से, उपकरणों से स्थूल जगत में घोषणा होती है। मंत्रों के माध्यम से सूक्ष्मजगत में अपनी भावना-सदिच्छा का प्रवाह भेजा जाता है। शत् शक्तियाँ हमारे ईमान, हमारे कल्याणकारी भावों का प्रमाण पाकर अपने अनुग्रह के अनुकूल वातावरण पैदा करें, यह भाव रखें। अनुकूलता दो प्रकार से पैदा होती है—(१) अवांछनीयता से बचाव तथा (२) वांछनीयता का योग। यह अधिकार भी देव शक्तियों को सौंपते हुए स्वस्तिवाचन करना चाहिए।

यज्ञकर्त्ताओं तथा उपस्थित सभी लोगों द्वारा स्वस्तिवाचन के लिए दाहिने हाथ में अक्षत, पुष्प व जल लिया जाए। बायाँ हाथ नीचे रहे। स्वस्तिवाचन मंत्र बोलें और सबके कल्याण की भावनाएँ मन में रखें। मंत्र पूरे होने पर पूजा-सामग्री सबके हाथों से लेकर एक तश्तरी में इकट्ठी कर ली जाए।

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ (यजु० २३/१९)

ॐ स्वस्ति नऽ इंद्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ (यजु० २५/१९)

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यंतरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ (यजु० १८/३६)

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ (यजु० ५/२१)

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चंद्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥ (यजु० १४/२०)

ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्षꣳ शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शांतिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ (यजु० ३६/१७)

रक्षा-विधान

जहाँ उत्कृष्ट बनने की, शुभ कार्य करने की आवश्यकता है, वहाँ यह भी आवश्यक है कि दुष्टों की दुष्प्रवृत्ति से सतर्क रहा जाए और उनसे जूझा जाए। दुष्ट प्रायः सज्जनों पर ही आक्रमण करते हैं। इसलिए नहीं कि देवतत्व कमजोर होते हैं, वरन इसलिए कि वे अपने समान ही सबको सज्जन

Scanned with CamScanner